ISSN-2321-3981

सचित्र प्रेरक बाल मासिक

देवपुत्र

मार्गशीर्ष २०७७ दिसम्बर २०२०

₹२०

कविता

हवा! हवा तुम कितनी अच्छी

– डॉ. राकेश चक्र

हवा! हवा तुम कितनी अच्छी
करती सबका ही अभिनंदन।
सुबह–शाम में प्रीत भरो तुम
तन–मन को कर देती कुंदन।।
पंछी मिलकर पढ़ें ककहरा
बुलबुल मीठे गीत सुनाएँ।
कोई पढ़ता नई कहानी
सब ही सब पर प्रेम लुटाएँ।।
सबको ही उपहार बाँटती
हवा तुम्हारा स्वागत वंदन।
हवा! हवा तुम कितनी अच्छी
करती सबका ही अभिनंदन।।
भेद न करती किसी जीव में
घूमा करती सब थल तल में।
गगन तुम्हें सबसे है प्यारा
प्रेम लुटाती कल–कल–जल में।।
सब पुष्पों की खुशबू लेकर
करती पूरे जग को चंदन।
हवा! हवा तुम कितनी अच्छी
करती सबका ही अभिनंदन।।
पंछी उड़ते मस्त गगन में
भरें ताजगी फैले बल से।
हम सबको भी जीवन देती
कभी चली तुम वेग प्रबल से।।
तुम्ही सृष्टि की मुख्य घटक हो
प्राण तुम्हारा है रघुनंदन।
हवा! हवा तुम कितनी अच्छी
सबका ही करती अभिनंदन।।
नाम तुम्हारे कई एक हैं
पवन, वायु तुम वात समीरण।
नाम उदान, अपान अनेकों
तुमसे ही घट–घट संचारण।।
डाल–पात को जीवन देती
देख रहा हूँ सुन्दर नर्तन।
हवा! हवा तुम कितनी अच्छी
सबका ही करती अभिनंदन।।

– मुरादाबाद (उ. प्र.)

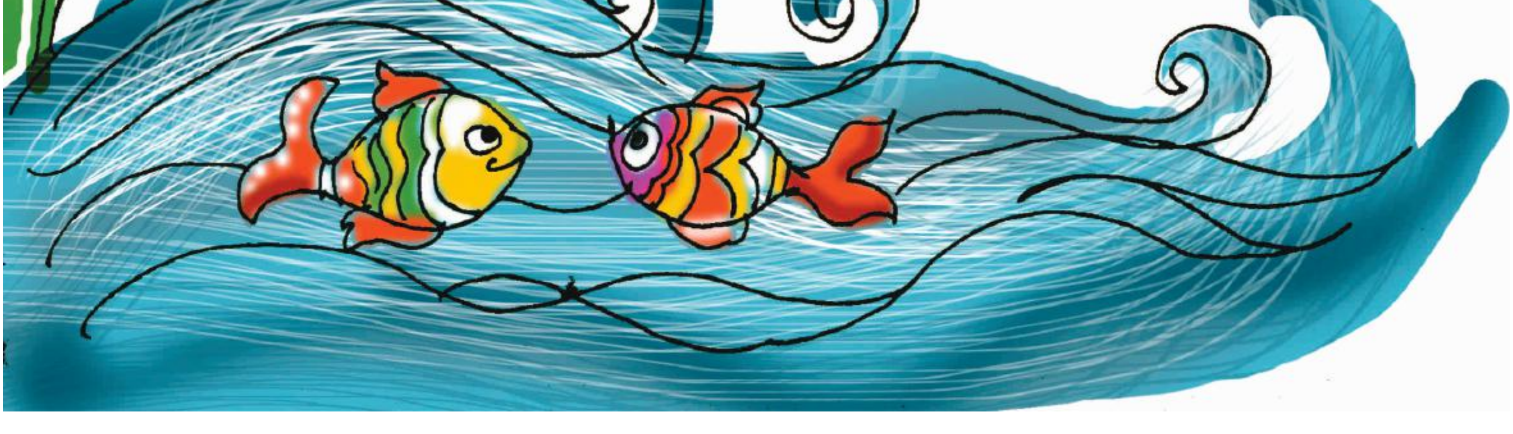

विश्व का सर्वाधिक प्रसार संख्या कीर्तिमान

देवपुत्र

(विद्या भारती से सम्बद्ध)

मार्गशीर्ष २०७७ ▪ वर्ष ४१
दिसम्बर २०२० ▪ अंक ६

प्रधान संपादक
कृष्ण कुमार अष्ठाना

प्रबंध संपादक
शशिकांत फड़के

मानद संपादक
डॉ. विकास दवे

कार्यकारी संपादक
गोपाल माहेश्वरी

मूल्य

एक अंक	:	२० रुपये
वार्षिक	:	१८० रुपये
त्रैवार्षिक	:	५०० रुपये
पंचवार्षिक	:	७५० रुपये
आजीवन	:	१४०० रुपये
सामूहिक वार्षिक	:	१३० रुपये

(कम से कम १० अंक लेने पर)

कृपया शुल्क भेजते समय चेक/ड्राफ्ट पर केवल 'सरस्वती बाल कल्याण न्यास' लिखें।

संपर्क
४०, संवाद नगर,
इन्दौर ४५२००१ (म. प्र.)
दूरध्वनि: (०७३१) २४००४३९

e-mail:
व्यवस्था विभाग
devputraindore@gmail.com
संपादन विभाग
editordevputra@gmail.com

अपनी बात

प्यारे भैया–बहिनो,

दिसम्बर मास आरंभ होते ही तीसरी दिनाँक को आता है हमारे प्रथम राष्ट्रपति डॉ. राजेन्द्र प्रसाद जी का जन्मदिवस और आप जानते ही हैं उनका जन्मदिन **विद्यार्थी दिवस** के रूप में मनाया जाता है। लेकिन बच्चो! हम सभी अनुभव कर रहे हैं कि यह विद्यार्थी दिवस विद्यार्थियों के लिए विशेष परिस्थितियों वाला है। कोरोनाकाल के उपरान्त अभी तक विद्यालयों की व्यवस्थाएँ सुचारु रूप से नहीं बन सकी है। पिछली होली से यह दीवाली 'यह मत छुओ, वह मत छुओ, इससे मत मिलो, वहाँ मत जाओ' जैसे अनेक निषेधों और मास्क, सेनेटाइजर, भौतिक दूरी, योग, काढ़ा आदि सुरक्षा उपायों की चिंता के साथ ही बीता। बाजार खुल गए, कल कारखाने चालू हुए पर आपके विद्यालय? विद्यालय की गतिविधियाँ अभी भी सामान्य नहीं हो पा रही हैं। कैसे यह सत्र बचेगा? अगली कक्षा तक पहुँचने का क्या मार्ग बनेगा? परीक्षा होगी नहीं होगी? होगी तो कैसे होगी? पढ़ाई कैसे होगी? ऐसी प्रश्नावली आपके मन मस्तिष्क को मथ रही होगी। लेकिन ऐसे में निराश होने की आवश्यकता नहीं है। अभी पिछले माह ही दीपावली के दीप जलाते हुए आपने अनुभव किया होगा कि दीप की वास्तविक प्रतिभा घने अंधकार में ही प्रकट होती हैं ऐसे ही विपरीतताओं के बीच यह वर्ष आपके 'उत्साहदीप' की परीक्षा का वर्ष है ऐसा मानिए। आपने एकलव्य की कहानी पढ़ी है न? वह अपने गुरु द्रोणाचार्य की प्रतिभा के सम्मुख अभ्यास करके भी अर्जुन से भी अधिक श्रेष्ठ धनुर्धर बना।

इस वर्ष आपके अध्यापकों का प्रत्यक्ष सान्निध्य आपको लगभग नहीं मिला है। आभासी माध्यमों (ऑनलाईन) से थोड़ा बहुत सम्पर्क भर ही हुआ पर आप यह विचारिए कि हम अभूतपूर्व वैश्विक आपदा में भी जब आप अपने स्वाध्याय, लगन व एकाग्रता से 'आपदा को अवसर' में बदल सकेंगे तो यह सफलता आपको आजीवन आपत्तियों में भी साहसी बने रहने की ऊर्जा देती रहेगी और यह ऊर्जा तो जीवन की सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि होगी। आपमें वह साहस है। अत: पूरे आत्मविश्वास से हर विकट स्थिति का सामना कर उस पर विजय प्राप्त कीजिए, क्योंकि ऐसे अवसर ही अपने आपकी क्षमताओं को सिद्ध करने के होते हैं और ये बड़े दुर्लभ होते हैं। सोचिए, कोई आप जैसा बहादुर देशभक्त सेना में भर्ती हो और उसे पराक्रम दिखाने का कोई अवसर ही न मिले तो उसका सच्चा शौर्य अप्रकट ही रह जाएगा। लेकिन यदि वह युद्ध या सेवा– सहायता के ऐसे किसी अवसर को सम्मुख पा जाए तो उसका शौर्य उसकी अपनी कल्पना से भी अधिक प्रखर हो उठता है। यह सही है कि ऐसा अवसर आए, यह किसी की कामना नहीं हो सकती, पर बिन बुलाई आपत्ति आ ही जाए तो उसका सामना, करना ही वीरों का धर्म है। कोरोना भी ऐसी ही परिस्थिति लेकर आया है पर आप सब 'विद्यार्थी वीर' इसे असाधारण धैर्य एवं साहस से श्रेष्ठ सफलता और विशिष्ट उपलब्धि के अवसर में निश्चय ही बदलकर दिखाएंगे। ऐसा मेरा दृढ़ विश्वास है।

आपका
बड़ा भैया

web site - www.devputra.com

।। अनुक्रमणिका ।।

कहानी

- अपाहिज कौन? - डॉ. राजीव गुप्ता ०५
- भूल - सुकीर्ति भटनागर ०८
- दो चूहे - बद्रीप्रसाद वर्मा अनजान १०
- अनूठा उपहार - श्यामा गुप्ता 'दर्शना' २०
- श्री श्री पेट्राम - शिवचरण चौहान २४
- जैसा करोगे वैसा भरोगे - नीरज कुमार मिश्रा २९
- अंगूर मीठे हो गये - हुन्दराज बलवाणी ३२
- किसी की खाँसी ..... - डॉ. अमिताभ शं. चौधुरी ३६
- शिष्टता - डॉ. घमण्डीलाल अग्रवाल ४२

आलेख

- संख्याओं के अभिन्न... - गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र' १२
- लोनार झील - डॉ. बानो सरताज ३४

लोककथा

- उड़द काली क्यों..... - ललिता श्रीवास्तव १३

प्रसंग

- गणित का शिक्षक - श्याम मनोहर व्यास ३१

बाल लेखनी

- मोटेराम भूत - अन्वि शंकर गुप्ता २२
- सच्चा मित्र - माधव गुप्ता ३८

कविता

- हवा हवा - डॉ. राकेश चक्र ०२
- ऑनलाईन क्लास - सिमरन बालानी १४
- मिर्ची खा फिर टेंटें कर - रावेन्द्र कुमार 'रवि' २३
- मस्तराम हाथी - दिशा ग्रोवर ३१
- पढ़ना बहुत जरूरी - डॉ. अश्वघोष ४०
- अम्मा मुझे बना दो.... - डॉ. विजयानंद ४४
- नन्हीं के सवाल - डॉ. अलका अग्रवाल ४४
- बचपन के खेल - नवीन गौतम ५१

स्तंभ

- आओ ऐसे बनें -मदनगोपाल सिंघल १५
- देश विशेष -श्रीधर बर्वे १६
- संस्कृति प्रश्नमाला - २५
- सचित्र विज्ञान वार्ता -संकेत गोस्वामी २६
- यह देश है वीर जवानों का १३ - २८
- आपकी पाती - ३०
- स्वयं बनें वैज्ञानिक - डॉ. राजीव ताम्बे - सुरेश कुलकर्णी ४०
- बड़े लोगों के हास्य प्रसंग - ४१
- विषय एक कल्पना अनेक:तारे
  - टिमटिम तारे - किशनलाल गायरी महाराज ४६
  - प्यारे तारे - डॉ. भेरूँलाल गर्ग ४६
  - दौड़ लगाते तारे - अशोक जैन ४७
- पुस्तक परिचय - ४८
- छः अंगुल मुस्कान - ४९

छोटी कहानी

- मकड़ी का प्रीतिभोज - संजीव कुमार 'आलोक' ३५
- आशीर्वाद - गोविंद भारद्वाज ४९
- वे फूल - पूनम पाण्डे ५०

चित्रकथा

- बहुत ठण्ड है - देवांशु वत्स ०७
- राम की सूझबूझ - देवांशु वत्स १९
- सामर्थ्य - संकेत गोस्वामी ४५

क्या आप देवपुत्र का शुल्क नेट बैंकिंग से जमा करा रहे हैं? तो कृपया ध्यान दें!

देवपुत्र का शुल्क इसकी प्रकाशन संस्था - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** के खाते में ही जमा कराएँ।
विवरण इस प्रकार है - खातेदार - **सरस्वती बाल कल्याण न्यास** बैंक - **स्टैट बैंक ऑफ इण्डिया, एम.वाय.एच.परिसर शाखा, इन्दौर** खाता क्रमांक-**38979903189 चालू खाता (Current Account) IFSC- SBIN0030359** राशि जमा करने के बाद जमा पर्ची को देवपुत्र के ई-मेल **ID devputraindore@gmail.com** पर अवश्य भेजिए। नेट बैंकिंग में प्रेषक के कॉलम में पहले अपना स्थान लिखें फिर **सरस्वती शिशु मंदिर** का संक्षेप लिखें तो सन्देश ठीक आता है। उदाहरण के लिए -सरस्वती शिशु मंदिर, संजीत मार्ग, मंदसौर ने देवपुत्र का शुल्क भेजा तो उन्हें प्रेषक में लिखना चाहिए - "**मन्दसौर संजीत मार्ग SSM**" आशा है सहयोग प्रदान करेंगे।

अपाहिज कौन?

– डॉ. राजीव गुप्ता

दृढ़ संकल्पों वाला व्यक्ति क्या कुछ नहीं कर सकता है। रमेश ने भी अपने परिश्रम और लगन से वह कर डाला जिससे उसके विरोधियों के मुख लज्जा से झुक गए और वे सदैव के लिए उसके मित्र बन गए।

बचपन से ही रमेश के एक पैर में खराबी थी। इसलिए वह कुछ लंगड़ा कर चलता था। विद्यालय के कई बच्चे उसका उहास उड़ाते थे। शंकर तो सारा दिन ही उसे लंगड़ा–लंगड़ा कह कर चिढ़ाया करता था।

शंकर सारे दिन खेल में मस्त रहता और रमेश सारे दिन पढ़ने में व्यस्त। कभी–कभी यदि वह खेल के मैदान में खेलने की इच्छा से पहुँच भी जाता तो शंकर उसे डाँट कर कहता, ''क्यों बे लंगड़े! खेलने आया है? ठीक से चला तक तो तुझ से जाता नहीं है, दौड़ क्या पाएगा?''

रमेश मनुहार करते हुए कहता, ''हाँ, शंकर भैया! मैं खूब तेज दौड़ूँगा। तुम मुझे अपने साथ खिलाओ तो सही।''

शंकर हँस कर कहता, ''हाँ... दौड़ते हुए तो तू एकदम केकड़ा लगेगा। तब तुझे देखकर बहुत आनन्द आएगा। चल भाग यहाँ से।''

रमेश रुआँसा होकर अपने घर लौट जाता है। उसको इस तरह उदास देखकर उसके माता–पिता भी उदास हो जाते। तब वह जल्दी से हँसने लगता और माँ से कहता, ''सच माँ! मेरी खेलने की बिल्कुल भी इच्छा नहीं है। मुझे तो खूब पढ़ना–लिखना है।'' यह कहकर वह किताब खोल कर पढ़ने बैठ जाता।

रमेश के घर के पास एक तालाब था। रमेश का मन जब बहुत अधिक उदास हो जाता तो वह तालाब के किनारे पेड़ की छाँव में बैठ जाया करता और वहाँ पर बैठे–बैठे तालाब में तैरती मछलियों को देखा करता।

एक दिन अचानक उसके मन में आया कि उसे भी तैरना सीखता चाहिए। उस दिन से वह तालाब के किनारे–किनारे तैरना सीखने लगा। वह रोज घंटों तैरने का अभ्यास करता। शुरु–शुरु में तो उसको अपनी कमजोर टाँग के कारण तैरने में बहुत असुविधा हुई। लेकिन वह अपने दृढ़ संकल्प एवं कठिन परिश्रम के कारण शीघ्र ही तैरने में कुशल हो गया। अब वह पूरे तालाब में बहुत ही सहजता से तैरा करता था। उसे इसमें खूब आनन्द आता।

एक दिन रमेश तालाब के किनारे पेड़ की छाँव में बैठा हुआ था। तभी वहाँ शंकर अपने मित्रों के साथ फुटबॉल खेलने आ गया। रमेश ने भी उससे अपने साथ खिलाने की प्रार्थना की। परन्तु उसने जब हमेशा कि तरह उसे झिड़क दिया तो वह चुपचाप वहाँ से चला गया और एक पेड़ के नीचे जा बैठा।

अचानक किसी लड़के ने फुटबॉल को जोर से ठोकर मारी, जिससे फुटबॉल तालाब में जा गिरी। शंकर उसे निकालने के लिए तालाब में जा घुसा। लेकिन वह ज्यों–ज्यों आगे बढ़ता त्यों–त्यों फुटबॉल पानी के बहाव में आगे बढ़ती जाती। अचानक उसका पैर फिसल गया और वह गहरे पानी में जा गिरा।

शंकर को तो अंदाजा भी नहीं था कि पानी इतना गहरा है। वह जितना निकलने के लिए हाथ–पैर मारता उतना ही डूबता चला जाता। वह किनारे की ओर असहाय दृष्टि से देखता हुआ चिल्लाने लगा, ''बचाओ, मुझे

बचाओ, नहीं तो मैं मर जाऊँगा।'' परन्तु उसके साथियों में से कोई भी लड़का तैरना नहीं जानता था। इसलिए वे रुआँसे से किनारे खड़े होकर उसे डूबता हुआ देख रहे थे।

अभी वे सब सोच ही रहे थे कि क्या किया जाए, गाँव जाकर किसी बड़े को बुला कर लाया जाए या फिर शंकर के घर जाकर उसके माता–पिता को सूचना दी जाए। परन्तु ऐसा करने से वे डर भी रहे थे कि कहीं घर में उनकी मार न पड़े, क्योंकि उनके माता–पिता ने उन्हें तालाब के किनारे खेलने से मना कर रखा था।

तभी पेड़ के नीचे अपने में ही ध्यानमग्न बैठे रमेश ने शंकर की करुण पुकार सुनी। वह तुरन्त वहाँ आ पहुँचा। शंकर को तालाब में डूबता देखकर वह बिना अपने कपड़े उतारे ही फुर्ती से तालाब में कूद कर उसकी ओर बढ़ने लगा। वह लगातार आवाज देकर शंकर का साहस भी बढ़ाता जा रहा था।

शंकर के सभी साथी किनारे पर खड़े आश्चर्य से उसे देख रहे थे। उन्हें नहीं ज्ञात था कि रमेश इतनी अच्छी तरह से तैरना जानता है। रमेश तैरता हुआ शंकर के पास पहुँच गया और उसका हाथ पकड़ कर किनारे कि ओर खींचने लगा। थोड़े ही प्रयास के बाद वह उसको किनारे पर लाने में सफल हो गया। तब सब लोगों ने मिलकर उसे तालाब से बाहर खींच लिया।

रमेश ने शंकर को घास पर उल्टा लेटा दिया। उसके पेट में बहुत सा पानी चला गया था। रमेश ने उसका पेट दबा–दबाकर सारा पानी निकाल दिया। कुछ देर तक तो शंकर यूँ ही पड़ा रहा, फिर धीरे–धीरे उसे होश आ गया।

मित्रों ने उसे जब सारी जानकारी दी तो उसकी आँखों में आँसू आ गए। वह उठकर रमेश से लिपट गया और बोला– ''रमेश! मुझे क्षमा कर दो! आज मुझे पता चला कि अपाहिज तुम नहीं बल्कि मैं हूँ।'' यदि आज तुम समय पर आकर मेरी जान नहीं बचाते तो मैं तो तालाब में डूबकर मर ही जाता।''

उसकी आँखों में पश्चाताप के आँसू देखकर रमेश ने उसे गले से लगा लिया।

– बाग कूँचा (उ. प्र.)

बहुत ठंड है!
चित्रकथा: देवांशु वत्स
एक सुबह...
माँ, ठंड बहुत है। आज मैं शाला नहीं जा सकूंगा!
ठीक है बेटा!
वाह! अब और सो लेता हूं!
कुछ देर बाद...
पिताजी, कार्यालय नहीं गए?
आज बहुत ठंड है।
कार्टून देख कर मजा आ गया! अब कुछ खाया जाए।
माँ, भूख लगी है।
बेटा, इस ठंड में मैं नहीं उठने वाली!
आं!
घंटे भर बाद...
ये लोग तो उठ ही नहीं रहे। इससे अच्छा तो मैं शाला ही चला जाता!
तभी अलार्म बजा...
ट्रिनन्न्न्न
ट्रिनन्न्न्न
अरे! मैं सपना देख रहा था!!
फिर...
सभी ठंड का बहाना करने लगे तो सारा काम ही ठप्प हो जाएगा!

भूल

– सुकीर्ति भटनागर

सेवानिवृत्त मेजर दीनदयाल उपाध्याय बहुत ही अनुशासनप्रिय और कड़क स्वभाव वाले थे। अस्सी वर्ष की अवस्था में भी नियम कानून को मानने वाले वह घर में ही वही अनुशासन चाहते थे। कुहू तो खुशी–खुशी उनकी सारी बातें मान लेती पर मनन को उनका तानाशाही रूप पसन्द नहीं था, क्योंकि वह देर तक सोना चाहता था, मित्रों के साथ मनपसन्द खेल–खेलना चाहता था और अपनी सब वस्तुएँ इधर–उधर फैला छोड़ कर ऊँचे स्वर में गाने सुनते हुए नाचना–कूदना चाहता था। पर दादाजी के कारण वह ऐसा कुछ भी न कर पाता। वैसे भी घुटनों में दर्द के कारण उनका चप्पल घसीट–घसीट कर चलना, सुबह–सुबह गला खंखारते हुए जोर से नाक साफ करना, उसे पसन्द नहीं था। उनका छींकना और खांसना तो तौबा–तौबा, सारी धरती हिला कर रख देते। इन्हीं सब कारणों से वह उनसे दूर–दूर ही रहता। कई–कई बार तो उनकी पुकार को भी अनसुनी कर देता। कुहू को दादाजी के प्रति मनन का ऐसा व्यवहार अच्छा न लगता। वह उससे कहती, ''भैया! दादाजी बहुत बूढ़े हो चुके हैं, बिना सहारे के ठीक से चल भी नहीं पाते, हमें उनका ध्यान रखना चाहिए। वैसे भी सारा दिन कमरे में अकेले बैठे–बैठे ऊब जाते होंगे। कभी तो उनसे हँस बोल लिया करो पर आप तो...'' ''अच्छा–अच्छा ठीक है। अपने उपदेश अपने पास ही रख। वैसे भी वह मुझे कुछ बोलने देंगे क्या? दस बार सुनाई अपनी ही पुरानी बातें दोहराने लगेंगे, या फिर शिष्टाचार की बातें करने लगेंगे। और नहीं तो मेरी दिनचर्या को ही कोसने लगेंगे। मुझे नहीं सुननी उनकी बे–सिर पैर की बातें। सच बात तो यह है कि बूढ़े लोग घर के सदस्यों का ध्यान आकर्षित करने के लिए ही हाय–हाय करते रहते हैं ताकि घर वाले अपना सब काम–धाम छोड़कर उनके आस–पास ही मंडराते रहें। पर इतना समय है क्या किसी के पास। अच्छा कुहू जब दादी थीं न, तो कितना मजा आता था। प्यारी–प्यारी कहानियाँ सुनाती थीं वह। शक्करपारे और मोतीचूर के लड्डू बना कर खिलाती थीं। कितना–कितना प्यार करती थीं और डाँटती तो बिल्कुल भी नहीं थीं।''

''पर भैया! अब तक तो वह भी बूढ़ी हो गई होतीं, चप–चप करके रोटी खाने वाली। तब वह हमें मिठाई बना कर न खिला पातीं बल्कि हमें ही पास बैठकर उन्हें खाना खिलाना पड़ता।''

''अरे बाप रे! तो उनका भी हमें ही ध्यान रखना पड़ता। यह तो मैंने सोचा ही नहीं।''

''तो अब सोच लो भैया जी! और जो है उसी में संतोष करो।'' कुहू ने कहा और हँसते हुए वहाँ से चली गई।

शाला में भी मनन का मन शैतानियों में ही लगा रहता, इसलिए न तो वह वहाँ ढंग से पढ़ता और न ही घर में। एक दिन तो कई दिनों का छूटा गृहकार्य न करके लाने के कारण मास्टर नंदकिशोर जी ने उसे पूरा समय कक्षा के बाहर मुर्गा बनाकर खड़े रहने का दण्ड दिया। यही नहीं अगले दिन प्राचार्य महोदय से उसकी ऊधम और ध्यानपूर्वक पढ़ाई न करके की शिकायत भी कर दी। तब प्राचार्य जी ने उसे डाँटते हुए विद्यालय से निकाल दिए जाने की धमकी तक दे डाली। इस डाँट और फटकार से वह अन्दर ही अन्दर क्रोध से तिलमिला उठा। पूरी छुट्टी होने के बाद घर लौटते समय उसने अपने घनिष्ठ मित्र समर से कहा, ''समर, इन मास्टर जी और प्राचार्य जी को तो मैं छोड़ने वाला नहीं, सबक सिखा कर ही रहूँगा।'' सही कहा तुमने। आखिर मास्टरजी पढ़ाते भी क्या हैं कक्षा में। गोल–गोल मुँह बनाकर जाने क्या–क्या बोलते रहते हैं कि कुछ पल्ले ही नहीं पड़ता।

उल्टे नाम लगा देते हैं हम छात्रों का कि हम मन लगाकर अपनी पढ़ाई नहीं करते। तुम्हारी तो शिकायत तक कर दी प्राचार्य जी से। कुछ तो करना होगा।''

आग में घी डालने जैसा काम करते हुए समर बोला तो मनन ने ''हूँ'' कहते हुए अपनी मुट्ठियाँ कस लीं। तभी मानसिक उद्विग्नता के कारण वह समाने पड़े पत्थर पर ध्यान न दे पाया और उससे अटक कर गिर पड़ा। जिससे उसकी पैर की हड्डी टूट गईं। तब समर ने राहगीरों की सहायता से उसे उसके घर पहुँचाया।

उसी शाम उसके पैर पर प्लास्टर चढ़ा दिया गया। अब वह सारा समय बिस्तर पर ही लेटा या बैठा रहता था। उसके माता–पिता तो सुबह नौ बजे तक अपने–अपने काम पर चले जाते और कुहू अपने विद्यालय। जाने से पहले माँ उसकी आवश्यकता की सभी वस्तुएँ साथ पड़ी टेबल पर रख जातीं। मनन अपने इस खाली समय में गाने सुनता, वीडियो गेम खेलता और टी. वी देखता। पर कब तक और कहाँ तक। धीरे–धीरे इन सब कामों से उसका मन भर गया और अपने अकेलेपन से उसे घबराहट होने लगी। कभी–कभी तो उसका मन यह भी चाहता कि वह दादाजी के कमरे में जाकर उनसे बातचीत करे। पर अभी उसे चलने के लिए मना किया गया था और दादाजी तो छड़ी के उपयोग के बाद भी बिना किसी दूसरे के सहारे के चल ही नहीं पाते थे। फलस्वरूप शाम तक का समय काटना उसके लिए कठिन हो गया और अपनी विवशता पर रोना भी आने लगा। जब यह बात उसने अपने पिताजी से कही तो उन्होंने सोचा कि क्यों न मनन का पलंग भी उसके दादाजी के कमरे में ही बिछा दिया जाए क्योंकि एक से दो भले होते हैं। यह बात सभी को पसन्द आई और अगले ही दिन उसे दादाजी के कमरे में भेज दिया गया। एक ही कमरे में होने के कारण, वह उनके साथ ताश खेलता, पहेलियाँ बुझाता और मजेदार चुटकुले सुनते–सुनाते हुए हँस–हँस कर लोट–पोट होता रहता। इस प्रकार उसके दिन बड़े मजे से निकल रहे थे। दोपहर एक बजे घर का सारा काम करने वाली सुनीता चाची दोनों को खाना बना कर खिला देतीं। भोजन के बाद मनन के दादाजी तो कुछ देर के लिए सो जाते और वह घर आई बाल पत्रिकाएँ पढ़ने लगता। दादाजी के कुछ ही दिनों के साथ ने उसकी सोच ही बदल दी थी, क्योंकि अब वह यह भी समझने लगा था कि बड़े जो भी कहते या करते हैं वह बच्चों के हित के लिए ही होता है, चाहे वे घर के बड़े–बूढ़े हों या विद्यालय के अध्यापक।

एक दुपहरी जब उसके दादाजी गहरी नींद में थे तो उसका ध्यान अचानक उनकी ओर चला गया। उनके दूध से सफेद बाल और झुर्रियों से भरा चेहरा देख वह विचलित हो उठा और सोचने लगा कि सचमुच ही कितने बूढ़े हो गए हैं वह। कुहू ठीक ही तो कहती थी कि उनका ध्यान रखना चाहिए, पर उसने क्या किया। वह तो हमेशा दूर–दूर ही भागता रहा उनसे। कभी भी उनकी बात नहीं मानी बल्कि उपेक्षा ही करता रहा। इसके विपरीत इन कष्ट भरे दिनों में वह एक मित्र के समान उसके साथ खेलते रहे, हँसते–बोलते रहे ताकि उसका मन लगा रहे। ऊपर से कठोर दिखने वाले वह अंदर से कितने सरल और प्यार करने वाले हैं। बस वह ही नहीं समझ पाया उन्हें और उनके अकेलेपन को, जिसे झेलते हुए कुछ ही दिनों में वह हताश हो गया था। कुछ समय उपरान्त जब वह पूरी तरह स्वस्थ होकर फिर से विद्यालय जाने लगा तो उसे पहले की तरह अपने ही कमरे में चले जाने के लिए कह दिया गया, पर वह नहीं माना क्योंकि अपने दादाजी के प्रति संवेदनहीन बने रहने की जो भूल उससे हुई थी उसे न सुधार कर वह दूसरी बड़ी भूल नहीं करना चाहता था।

– पटियाला (पंजाब)

दो चूहे

– बद्री प्रसाद वर्मा अनजान

शहर के एक मोहल्ले में दो चूहे रहते थे। एक का नाम चीनू और दूसरे का नाम चंदू था। दोनों चूहे एक–दूसरे के सच्चे मित्र थे। दोनों का घर अगल–बगल में था। दोनों दोस्त कहीं भी जाते तो साथ–साथ जाते थे।

दोनों के माँ–पिताजी ने दोनों को एक–एक मोबाईल दिला रखा था। ताकि किसी मुसीबत में फँस जाने पर अपने–अपने माता–पिता को फोन कर सारा हाल बता सके।

कॉलोनी में गोपी हलवाई की बहुत बड़ी मिठाई की दुकान थी जहाँ पर सुबह से देर रात तक ग्राहकों की भीड़ जमा रहती थी।

एक दिन दोनों चूहे सबकी दृष्टि बचाकर दुकान में घुस गए और अन्दर कारखाने में पहुँचकर खूब ठाठ से छक कर रसगुल्ला, रस–मलाई, गुलाब जामुन और लड्डू पेड़े की भोग लगाई। पेटभर मिठाई खाने के बाद दोनों चूहे सबसे दृष्टि बचाकर बाहर आ गए और घर को चल दिए।

एक दिन चीनू अपने दोस्त चंदू से बोला चंदू भाई आज मेरा मन दही–बड़ा और चाट खाने को कर रहा है। सुना है लखन–चाटवाला सबसे मस्त दही बड़ा और चाट बनाता है। आज हम उसी के दुकान पर चलते हैं।

''अरे चीनू! क्या तेरे पास रुपये हैं दही–बड़ा और चाट खाने के लिए?'' चंदू पूछ पड़ा।

''हमारे पास रुपये नहीं है। फिर भी चलो चलते हैं। लखन चाट वाले की दुकान पर।''

चंदू और चीनू जब लखन चाट वाले की दुकान पर पहुँचे तो देखा दुकान के अन्दर खाने वालों की भीड़ लगी हुई थी।

चीनू और चंदू कुछ देर तक दुकान के बाहर खड़े रहे फिर किसी तरह से छुपते–छुपाते दोनों कारखाने में जा पहुँचे वहाँ पर दोनों ने देखा कि ढ़ेर सारे दोनों में दही बड़ा और चाट ग्राहकों को देने के लिए लगाकर रखे हुए थे।

चंदू और चीनू सबकी आँख बचाकर कर एक–एक दोना दही बड़ा और चाट उठाकर एक अलमारी के नीचे ले जाकर ठाठ से बैठकर खाने लगे। दही बड़ा और चाट खाने के बाद दोनों फिर छुपते–छुपाते दुकान से बाहर आ गए और तेज कदमों से अपने घर की ओर चल दिए।

एक दिन चीनू और चंदू शाम को कॉलोनी में घूम रहे थे तभी उनकी दृष्टि गोपाल बेकरी वाले के दुकान पर जा पड़ी। दुकान देखकर चीनू अपने दोस्त चंदू से बोला –''चंदू भाई हमें तो नमकीन बिस्कुट, रोल, बाबी केक खस्ता खाए बहुत दिन हो गए आज तो मेरा मन नमकीन बिस्कुट व केक खाने को कर रहा है।''

''तुम बहुत लालची हो गए हो और रोज–रोज फोकट के खाने की आदत पड़ गई है। जाओ तुम अकेले जाओ मैं तुम्हारे साथ नहीं जाऊँगा। वैसे मेरा मन कुछ खाने को नहीं कर रहा है। एक काम करो दुकान के बगल से अन्दर चले आओ और जो मन करें खाकर जल्दी आ जाना। मैं बाहर दुकान के इस कोने में बैठा तुम्हारे आने

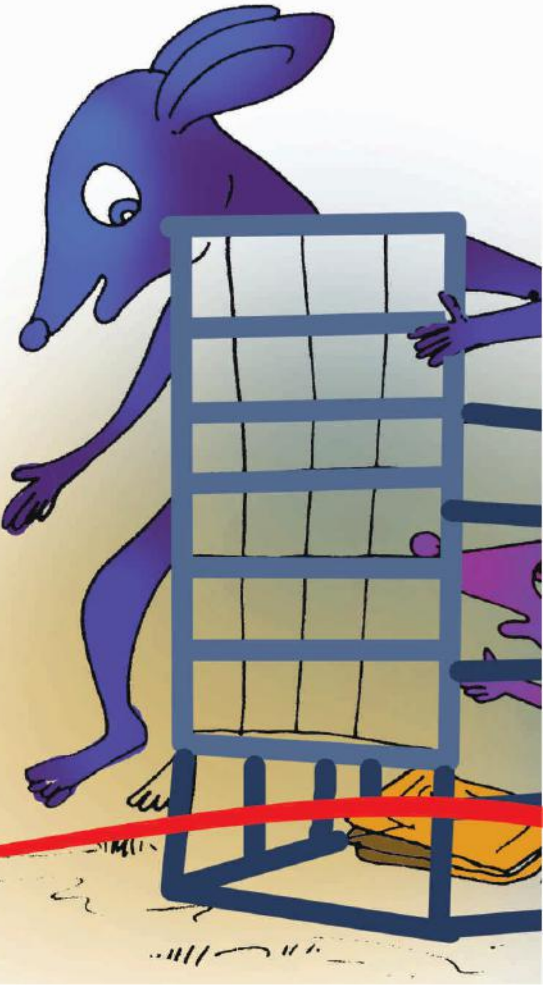

की प्रतीक्षा करूँगा। तुम खा-पीकर जल्दी आ जाना समझे।'' ''हाँ जल्दी आ जाऊँगा।'' इतना कहकर चीनू झटपट दुकान में घुस गया।

इधर चंदू बाहर बैठा अपने मित्र चीनू की प्रतीक्षा करता रहा। एक घंटा दो घंटा बीत जाने के बाद भी जब चीनू दुकान से बाहर नहीं आया तो चंदू को अपने मित्र की चिंता सताने लगी।

वह अपने मित्र चीनू का पता लगाने के लिए अंदर दुकान में जा घुसा। वहाँ उसने देखा कि उसका दोस्त चीनू एक चूहेदानी में फँसा बचाओ-बचाओ चिल्ला रहा था।

चंदू को देखकर चीनू बोला- ''चंदू भाई मुझे जल्दी से इस संकट से बाहर निकालो।'' ''आ गई न अकल ठिकाने और खाओगे फोकट का माल?'' चंदू चीनू को कहकर चिढ़ाने लगा।

''चंदू भाई तुम जो चाहे कह लो हमें सब स्वीकार है मगर हमें किसी प्रकार से इस चूहेदानी से बाहर निकालो। मैं तुम्हारे हाथ जोड़ता हूँ, पैर पड़ता हूँ।''

''बस अब चुप हो जाओ। मैं चूहेदानी का फाटक खोलता हूँ, तुम बाहर आ जाना।'' इतना कहकर चंदू ने जैसे ही दोनों हाथों से चूहेदानी का फाटक खोला कि चीनू छलांग लगाकर बाहर आ गया। उसकी जान में जान आ गई और चंदू को लाख-लाख बधाई देने लगा।

चंदू चीनू को साथ लेकर दुकान से बाहर आकर बोला- ''आज का दिन तो चौपट हो गया अब चलो घर चलते हैं।'' इतना कहकर चंदू अपने मित्र के साथ तेज कदमों से घर की ओर चल दिया।

चीनू और चंदू को घर में रहते कई दिन बीत गए। एक दिन चीनू बोला- ''चंदू भाई! आज बाहर घूमने का मन कर रहा है चलो थोड़ा घूम आएँ।''

दोनों बाहर घूमने चल दिए। कुछ दूर जाने के बाद चीनू ने देखा कि एक मकान के सामने ढेर सारे चूहों की भीड़ लगी हुई थी। मकान के बाहर एक बड़ा सा पंडाल लगा हुआ था। उसके चारों ओर ढेर सारे गुब्बारे सजाए गए थे।

चंदू ने रुककर एक चूहे से पूछा- ''यहाँ क्या हो रहा है?'' उसने बताया- ''मेरा नाम ओम है आज मेरा जन्मदिन है, हम अपना जन्मदिन मना रहे हैं।''

''क्या मैं अपने मित्र चीनू के साथ तुम्हारे जन्म दिन में सम्मिलित हो सकता हूँ? मेरा नाम चंदू है, हम दोनों मित्र इसी मोहल्ले में रहते हैं।''

''चंदू और चीनू तुम दोनों हमारा जन्मदिन देखकर खा-पीकर ही जाना मैं तुम दोनों को निमंत्रण देता हूँ। जाओ कुर्सी पर तुम दोनों बैठ जाओ।''

इतना सुनना था कि ओम के सारे मित्र ओम के साथ नाचने-गाने लगे।

सबको नाचते-गाते देखकर चीनू और चंदू भी कुर्सी से नीचे उतर कर सबको अपना नाच दिखाने लगे।

चंदू और चीनू का नृत्य देखकर ओम के सारे दोस्त चंदू और चीनू की खूब वाहवाही करने लगे और सबने चंदू और चीनू को अपना मित्र बना लिया।

देर रात तक नाचना-गाना चलता रहा फिर सारे अतिथि और ओम के मित्र खा-पीकर अपने-अपने घर जाने की तैयारी करने लगे। तभी ओम ने चंदू और चीनू को पास बुलाकर एक साथ फोटो खिंचवाया और बोला- ''अब तुम दोनों इसी तरह हम सभी मित्रों के जन्मदिन के उत्सव में आते रहना।'' ओम की बात सुनकर चीनू और चंदू खुशी से गदगद होकर अपने घर को चल दिए।

- गोलाबाजार (उ. प्र.)

संख्याओं के अभिन्न मित्र

– गौरीशंकर वैश्य 'विनम्र'

अद्‌भुत प्रतिभा के धनी भारत के महान गणितज्ञ श्रीनिवास रामानुजन के विषय में विदेशों में विशेषत: यूरोप और अमेरिका के गणितज्ञ उनकी अनुपम गणितीय प्रतिभा से परिचित हैं परन्तु भारतीय समाज इनकी खोजपूर्ण जानकारियों से प्राय: अनजान ही है।

रामानुजन ने सोलह वर्ष की आयु में ही विश्वविख्यात गणितज्ञ जी. एस. कार की गणित की पुस्तक में से ज्यामिति तथा बीजगणित के प्रमेय व अनेक सूत्र हल कर दिए थे। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय (लंदन) के गणित प्रो. जी. एस. हार्डी को रामानुजन के गणित संबंधी अद्‌भुत कार्य की सूचना मिली तो वे आश्चर्यचकित रह गए। उन्होंने रामानुजन को इंग्लैण्ड बुलाने का प्रबंध किया।

सन् १९१४ से १९१९ ई. तक रामानुजन अपना शोध कार्य तो करते रहे परन्तु वे असाध्य रोगों से ग्रसित हो गए, जिस समय रामानुजन लंदन में बहुत बीमार, लगभग मरणासन्न अवस्था में थे, तब प्रो. हार्डी उनसे मिलने के लिए वहाँ गये। जाते समय बराबर यही विचार करते रहे कि ''आज रामानुजन से मैं गणित के संबंध में कोई किसी प्रकार की चर्चा नहीं करूँगा।'' परन्तु जब वे रामानुजन से मिले तो उन्होंने रामानुजन से कहा, ''आज मैं जिस टैक्सी से आया हूँ, उसका नम्बर १७२९ है, जो अपशकुन संख्या है।'' इस पर रामानुजन ने तुरन्त कहा– ''नहीं, नहीं सर! यह संख्या छोटी से छोटी संख्या है, जिसे भिन्न–भिन्न रूपों दो संख्याओं को धन के योग के रूप में व्यक्त किया जा सकता है।'' और तभी पास में रखे कागज पर पेंसिल से उस संख्या को इस प्रकार हल कर दिया।

$$१७२९ = १^3 + १२^3$$
$$१७२९ = ९^3 + १०^3$$
$$१७२९ = ७ \times १३ \times १९$$

इस बात को सुनकर महान गणितज्ञ लिटिल हुड की टिप्पणी थी– ''वास्तव में रामानुजन प्रत्येक संख्या के अभिन्न मित्र थे।'' केवल ३२ वर्ष की आयु पाकर रामानुजन ने गणित के क्षेत्र में अपूर्व ऊँचाई प्राप्त की।

– लखनऊ (उ. प्र.)

उलझ गए! 21

बबलू ने रोजी के बारे में श्याम से बताया-'यह मेरे मामा की बहन की माँ के पोते के पिता की बेटी है।' रोजी बबलू के रिश्ते में क्या लगती है?

उत्तर: रोजी बबलू की ममेरी बहन है।

उड़द काली क्यों? मुँह टेढ़ा क्यों?

– ललिता श्रीवास्तव

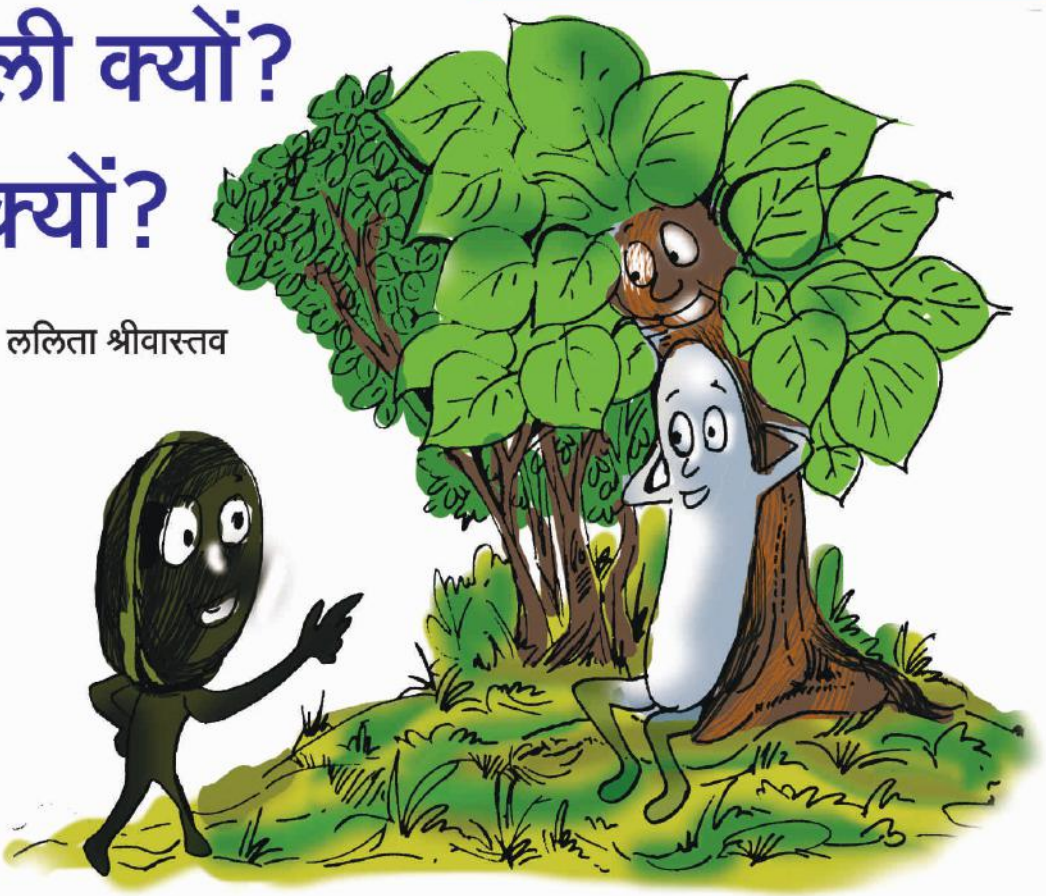

बात उस समय की है जब चावल और उड़द बहुत गहरे मित्र हुआ करते थे। चावल के विभिन्न प्रकार देखकर, सुनकर उड़द उससे मन ही मन जला करती थी। उड़द को जब भी अवसर मिलता वह चावल को नीचा दिखाने में नहीं चूकती थी।

एक शाम चावल और उड़द ने दूर तक घूमने की सोची। तय हुआ कल दोनों शाम को निश्चित समय पर घूमने चलेंगे। खूब घूमेंगे, आनन्द उठायेंगे।

चावल अधिक उत्साही था। वह समय से पहले ही निर्धारित स्थान पर पहुँच गया। थोड़ी देर बाद उड़द आई। उसने देखा चावल अपनी सफेदी और गंध से पूरे वातावरण को खुशनुमा बना रहा है और पीपल के पेड़ के नीचे पैर हिलता प्रसन्नता से बैठा था। यह देखकर उड़द तो ईर्ष्या से भर उठी। परन्तु बोली में मिठास लाते हुए बोली– ''का हो उरई के खोपा! तुम जल्दी आ गये?''

उड़द ने कुछ इस तरह बोला कि पीपल के सारे पत्ते ताली बजाते हुए हँस पड़े। एक छोटे पत्ते ने पूछा– ''उड़द बहन! आपने इन्हें उरई का खोपा क्यों कहा?''

उड़द इठलाकर बोली– ''अरे यह एक स्थान पर नहीं रहता है। पहले एक साथ बोते हैं जब थोड़ा बड़ा हो जाता है तब एक–एक पौधा अलग–अलग खोपा जाता है। क्यों उरई के खोपा मैं ठीक कह रही हूँ ना?''

चावल बेचारा झेंप गया।

उड़द इतने पर भी चुप न बैठी– पीपल के पत्ते से बोली– ''अब तुम लोग ही बताओ हम जहाँ उगते हैं वहीं बढ़ते हैं न?'' पत्तों ने पुन: हँसते हुए ताली बजाई।

चावल का सारा उत्साह ठंडा पड़ गया। वह उदास हो गया। उसे उड़द की यह बात बिलकुल भी अच्छी नहीं लगी पर वह चुप रहा। उड़द बोली– ''अरे बुरा मान गये क्या मैंने तो सच ही कहा उरई के खोपा!''

अब तो हद हो गई अब चावल से नहीं रहा गया वह बोला– ''यह तो मेरी विशेषता है। मैं लोगों के बहुत प्रकार से काम आता हूँ और मेरे भिन्न–भिन्न प्रकार भी तो हैं। मेरी गंध भी कितनी अच्छी होती है।'' पीपल के पत्तों ने सिर हिलाकर हामी भरी। बाजी हाथ से जाती देख उड़द फिर व्यंग्य से बोली– ''पर हो तो खोपा ही न? खोपा कहीं

का।'' पत्ते फिर ताली बजाकर हँसने लगे। चावल बोला– ''नहीं मैं तुम्हारे अकेले के कहने से नहीं मानूँगा।''

''तो चलो निर्णय कर लेते हैं कि तुम खोपा हो कि नहीं।'' उड़द बोली। चावल ने कहा– ''हाँ चलो।''

अब किससे पूछा जाए। चावल ने देखा आस–पास तो वही लोग हैं जो उड़द की बताई बात ही जानते थे। ऐसे तो निर्णय नहीं हो सकता।

''अब क्या करें?'' दोनों सोच में पड़ गये तब पीपल का पेड़ बोला– ''देखो यहाँ हम लोग तो निर्णय नहीं दे सकते।''

''क्यों?'' उड़द तमतमाते हुए बोली।

पीपल ने समझाते हुए कहा– ''तुम दोनों ही अनाज हो। तुम दोनों की बात वहीं सुन सकता है जो अनाज हो और तुम दोनों के बारे में जानता हो।''

तय हुआ आगे चलने पर जो अनाज सबसे पहले मिलेगा। उसी से इस बात का निर्णय करवा लेंगे।

दोनों मान गये आगे चल दिये रास्ते के दोनों ओर से खेतों में हरे–भरे पौधे तो झूम रहे थे लेकिन दाने किसी में भी नहीं आये थे।

चलते–चलते काफी देर हो गई अंधेरा होना शुरू हो गया था। तभी उन्हें एक बैलगाड़ी दिखाई दी। उसमें कुछ भरा था दोनों दौड़कर बैलगाड़ी के पास पहुँचे। देखा तो बैलगाड़ी चनों से भरी थी। चनों ने चावल को देखकर चहक कर कहा– ''कहाँ चले हो राजभोग?''

चावल खिल उठा। उसने कहा– ''का बताएँ छप्पनो पकवान! ई ससुर उड़द का दोसा हमका कहत है उरई का खोपा।''

अब उड़द ने देखा चना चावल को राजभोग बुला रहा है और चावल चने को छप्पन पकवान बोल रहा है। अर्थात् एक राजभोग तो दूसरा छप्पन पकवान। यह सुनकर उड़द मुँह टेढ़ाकर आगे बढ़ गई। आगे थी कीचड़, उड़द औंधे मुँह कीचड़ में गिर गई। तभी से उड़द काली हो गई और उसका मुँह टेढ़ा हो गया। देखा है न उड़द में एक सफेद लकीर होती है। इसलिये कहते हैं मित्रों का अपमान कभी नहीं करना चाहिए।

कविता

ऑनलाइन क्लास

– सिमरन बालानी

न चोट लगी
न मित्रों ने सहलाया
न गेंद संग धरा खिलखिलाई
न उत्सवों में आकाश जगमगाया
इक साल ऑनलाइन क्लास का भी आया

न गलतियाँ हुई
न इबारतों को मिटाया
न पन्नों ने शक्ले उकेरी,
न किताब गुम होने का बहाना बनाया
इक साल ऑनलाइन क्लास का भी आया

न आह न वाह
न वाद न विवाद
नेटवर्क ने दिखाये अपने मिजाज
इतिहास ने अबकी खुद को न दोहराया
इक साल ऑनलाइन क्लास का भी आया

न अनुभवों ने कॉलर ऊँची की,
न नादानियाँ फुस–फुसाई
न बाँसुरी मुस्काई,
न ठहाके गरजे
शिकायतें सिफॉरिशों का न बसंत महका
न सावन बरसा
इक साल ऑनलाइन क्लास का भी आया

– इन्दौर (म. प्र.)

सहायता का सुख

– मदनगोपाल सिंहल

दस ग्यारह वर्ष की अवस्था थी उस बालक की। वह अपने पिता से जिद करके साथ रुपये की मांग कर रहा था और पिता मन ही मन सोच रहे थे कि आखिर यह बालक इन रुपयों को लेकर उनका करेगा क्या?

अंत में उन्होंने उस बालक को सात रुपये दे दिये और साथ ही उसके पीछे भेदिये की भांति घर का एक नौकर भी लगा दिया जिससे कि उन्हें इस बात का ज्ञान हो सके कि बालक ने उन रुपयों का किया क्या है।

बालक रुपये जेब में रखकर घर से निकला। एक–दूसरे मोहल्ले में जाकर उसने एक टूटे–फूटे घर का दरवाजा खट–खटाया। अन्दर से एक छोटा सा बालक निकला– नंगे सर, नंगे पाँव और फटे से कपड़े पहने हुए। बालक ने उसका हाथ पकड़ा और बाजार की ओर चल पड़ा। ''कौन–कौन सी पुस्तकें नहीं हैं तुम्हारे पास?'' उसने अपने निर्धन साथी से पूछा।

उसने दो तीन पुस्तकों के नाम बताये और बालक ने वे सभी पुस्तकें उसे खरीद दीं। निर्धन बालक पुस्तकें पाकर प्रसन्न हो उठा। अभी बालक की जेब में दो रुपये और शेष थे। दोनों साथी पुन: आगे बढ़े।

चलते–चलते बालक रुक गया।

''क्यों? निर्धन बालक ने पूछा– ''यहाँ से क्या लेना है?''

''तुम्हारे लिये चप्पलें'' बालक ने उत्तर दिया।

चप्पलें खरीदी गयीं और उन्हें पहन कर अपने हितैषी को कृतज्ञता–पूर्ण दृष्टि से देखता हुआ निर्धन बालक अपने घर लौट गया।

हमारे इस कथानक का नायक भी अपने घर लौटा। संतोष और प्रसन्नता से उसका नन्हा सा मुख मण्डल प्रफुल्लित हो रहा था। किन्तु उसके घर पहुँचने से पहिले ही उसके पिता को नौकर से यह सब समाचार मिल चुका था। बालक घर आया तो पिता ने प्रसन्नता से उसे अपने हृदय से लगा लिया।

''तुमने मुझसे यह क्यों नहीं कह दिया था पागल! कि मुझे इस कार्य के लिये रुपयों की आवश्यकता है।'' उन्होंने कहा।

बालक चुप खड़ा था, सिर झुकाये। उसका नाम था चितरंजन, जिसने बड़े होकर देशबन्धु चितरंजनदास के नाम से संसार में महान ख्याति प्राप्त की। ■

आओ, आओ खेलें खेल

– चाँद मोहम्मद घोसी

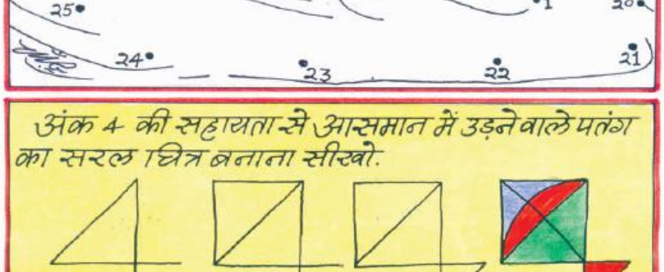

– नन्हा बाजार, मेड़ता सिटी (राजस्थान)

देश विशेष

शेष राजतंत्रीय देश

– श्रीधर बर्वे

राजनीतिक व्यवस्था की दृष्टि से वर्तमान युग लोकतन्त्र का है। एक समय था जब पूरी दुनिया में राजतन्त्र का एक छत्र राज्य हुआ करता था। सारे संसार के अलग–अलग देशों में ये विभिन्न शासक, सम्राट, बादशाह, सुल्तान, नरेश, राजा, महाराजा, शेख, नवाब जैसी भिन्न–भिन्न उपाधियाँ धारण कर राज करते रहे थे।

ज्ञान प्रसार एवं जन जागृति के कारण निरंकुश एक छत्र शासकों को अपने अधिकारों में कमी कर जनता को सौंपने पड़े। राज्य और देश पर जनका का अधिकार होता है, इस आधारभूत सिद्धान्त को राजाओं, एकछत्र शासकों ने आसानी से स्वीकार नहीं किया। जनता को लम्बा संघर्ष करना पड़ा, तब उसे अधिकारों की प्राप्ति हुई और मानवीय गरिमा–सम्मान के साथ नागरिक जीवन सम्भव हो सका। ब्रिटेन, फ्राँस, अमेरिका और रूस की राज्य क्रांति इसके ज्वलंत उदाहरण हैं।

जहाँ राजाओं, बादशाहों आदि ने समय के साथ कदम नहीं मिलाया, समय की दीवार का लिखा नहीं पढ़ा, उन्हें अपना राजसिंहासन खोना पड़ा है। इसी कारण विश्व के अधिकांश देशों से राजतंत्र समाप्त हो गये। अब केवल इने–गिने देशों में ही राजाओं के राज शेष रह गये हैं। वह भी इसलिए कि उन्होंने राजकाज और दैनिक काम काज दायित्व जनता (जनता के प्रतिनिधियों को सौंप कर स्वयं को राजमहल और औपचारिकता के पद तक सीमित कर लिया है।

देश में जनता को अधिकार सौंप कर अपना राज सिंहासन बचाये रखने में योरोप के देशों ने दूरदर्शिता से काम लिया है। इस दिशा में ब्रिटेन, स्वीडन, नार्वे, डेनमार्क, बेल्जियम, निदर–लैंड्स, लक्सम बर्ग, मोनाको और लिख्टेंसटाझ के राजा–रानी ने स्वयं को राज्य का संवैधानिक प्रमुख बनाये रखा और जन सामान्य को अधिकार सौंप दिये।

इस सन्दर्भ में पिछली शताब्दी के मध्य अपदस्थ किये गए मिस्र के अन्तिम राजा के शब्द प्रासंगिक हैं– ''विश्व में हमेशा पाँच बादशाहों का राज्य बना रहेगा– चार ताश के और पाँचवा ब्रिटेन के बादशाह का।'' अंग्रेजी में इसीलिए कहावत है कि– ''राजा कोई गलती नहीं करता।'' सच भी है गलती वही करता है जो काम करता है, और फिर सरकारी गलती तो जनता की निर्वाचित सरकार द्वारा होगी, राजा द्वारा नहीं।

राजतन्त्र के अवकाश और पुनर्स्थापना की एक रोचक घटना पिछली शताब्दी के मध्य योरोपीय देश स्पेन में घटी। विगत शताब्दी के चौथे दशक में फासिस्ट तानाशाह जनरल फ्रैंको ने राजा को अपदस्थ कर स्वयं को वहाँ का एकछत्र शासक नियुक्त कर लिया और स्वयं फ्रैंको ने ही यह वसीयत भी कर दी थी कि उनके स्वर्गवास के बाद पूर्व राजवंश का उत्तराधिकारी पुनः राजा बनकर सत्तारूढ़ होगा और ऐसा हुआ भी। १९७६ में फ्रैंको के देहान्त के बाद किंग हुमान कार्लोस ने सिंहासन सम्भाल

लिया। स्वयंभू राजा की एक और रोचक घटना अफ्रीका महाद्वीप की है। मध्य अफ्रीकी गणराज्य में निर्वाचित सरकार का तख्ता १९६६ में पलटकर करनल बोकासा ने स्वयं पहले राष्ट्रपति नियुक्त किया, फिर स्वयं को सम्राट भी घोषित कर दिया। १९७९ में जनता के आक्रोश के सामने बोकासा को घुटने टेककर सत्ता त्यागना पड़ी।

एशिया महाद्वीप में भी इसी प्रकार की घटना घटी, कम्बोडिया में। कम्बोडिया के राजा के उत्तराधिकारी नरोत्तम सिंह नूक ने पहले तो राजसिंहासन त्यागकर देश को गणराज्य बनाया। दीर्घकाल तक कम्बोडिया आन्तरिक अशांति और उथल-पुथल का शिकार रहा अंतत: पुन: राजतंत्र की स्थापना १९९३ में हुई। प्रत्यक्ष शासन निर्वाचित सरकार के हाथों में है।

दक्षिण पूर्वी एशिया के देशों थाईलैण्ड और ब्रुनई में राजतंत्र है। स्वतंत्रता के पहले मलाया में लगभग एक दर्जन से अधिक राजाओं के राज्य थे। पारस्परिक समझौता कर, संघ बद्ध हो पारी-पारी से देश का प्रमुख राजा बनने का निर्णय लेकर अपने सिंहासन बचा लिये।

सुदूर पूर्व में जापान में कई शताब्दियों से राजवंश का राज्य अनवरत चला आ रहा है- एशिया में पूर्व से पश्चिम की ओर बढ़ने पर दक्षिण एशिया में बस एक मात्र राजतंत्र शेष है- भूटान। भूटान के वर्तमान नरेश के पितामह ने सुधार कार्यक्रम आरम्भ किये और भूटान को आधुनिक युग के अनुकूल ढ़ालने की ओर कदम बढ़ाये।

मोरक्को

कम्बोडिया

राज्य व्यवस्था को राजपरिवार ने लोकतांत्रिक बना दिया। अब इस नन्हें हिमालयी राष्ट्र में लोकतांत्रिक सरकार है और वैधानिक राजशाही भी।

जिन दिनों भूटान में परिवर्तनों का दौर चल रहा था उन्हीं दिनों पड़ोसी हिमालयी देश नेपाल में भी लोकतांत्रिक परिवर्तनों के लिए उबल रहा था। नेपाल का राज परिवार युग परिवर्तन की इबारत नहीं पढ़ सका। परिणाम हुआ वहाँ नये गणतांत्रिक राज्य का उदय।

पश्चिम एशिया में अरब प्रायद्वीप की गोद और फारस खाड़ी के आधा दर्जन राज परिवार राजगद्दी संभाले हुए हैं। सबसे बड़ा है सऊदी अरब, शेष हैं- ओमान, कतर, कुवैत, संयुक्त अरब अमीरात, बहरैन तथा जोर्डन। इन देशों की शासन व्यवस्था अभी भी लोकतंत्र से बहुत दूर है। यद्यपि बहरैन, कुवैत और जोर्डन में नागरिकों को शासनाधिकार देने की ओर कदम बढ़े हैं फिर भी पूर्ण लोकतंत्रीय सरकारों के गठन के अवसर दूर है।

अमेरिका (उत्तरी आर दक्षिणी दोनों) महाद्वीपों में किसी भी देश में न राजा है, न कोई सम्राट या बादशाह।

अफ्रीका महाद्वीप के ५४ देशों में से केवल तीन देशों में राज परिवार राज्य कर रहे हैं। इन तीनों में सबसे बड़ा है अफ्रीका के पश्चिमोत्तर में स्थित 'मोरक्को'। मोरक्को एक अरब देश है। राजतंत्र अन्तर्गत देश का प्रमुख राजा होता है और जनता द्वारा निर्वाचित सरकार को शासनाधिकार प्राप्त है।

से एकीकृत हो गया। यह घटना भारत की है। स्वतंत्रता प्राप्ति (१९४७) के अवसर पर भारत में दो प्रकार के भू–क्षेत्र थे। एक वे जो सीधे अंग्रेजों के शासन में थे, दूसरे वे जो देशी राजाओं, महाराजाओं, नवाबों जैसे राजतंत्रों के अधीन थे। ऐसे राज्यों की संख्या ५५० से अधिक थी। स्वतंत्रता संग्राम के आन्दोलन से सृजित राष्ट्रवाद की भावना की प्रबलता तथा सरदार वल्लभ भाई पटेल के दूरदर्शी अथक प्रयासों से देशी राजाओं के राज्यों का विलय भारत में हुआ।

अफ्रीका के दक्षिणी भाग में लेसोथो एवं स्वाजीलैंड लेसोथो एक ऐसा राजतंत्री देश है जो पूरी तरह से दक्षिण अफ्रीका के भीतर बसा हुआ है। अन्य देश स्वाजीलैण्ड है जो राजतंत्र द्वारा शासित है। स्वाजीलैण्ड तीन ओर से दक्षिण अफ्रीका से घिरा हुआ है, चौथी ओर उसके, मोजाम्बिक देश है।

विशाल प्रशान्त महासागर के दो द्वीप देशों टोंगा और समोआ में भी राजाओं का राज्य है। टोंगा ऐसा देश है जहाँ मकर रेखा और अन्तरराष्ट्रीय तारीख रेखा मिलती हैं। चार जून १९७० को स्वतन्त्रता प्राप्ति के पूर्व टोंगा ब्रिटेन का उपनिवेश था। टोंगा के वर्तमान राजा जॉर्ज तुपोऊ पंचम है तथा राजधानी का नाम है नुकुअलोफा।

समोआ एक जनवरी १९६२ को स्वतन्त्र देश बना। देश के राजा हैं– 'तुइयातुआ तुपुआ तामासेसे'। राजधानी है 'अपिया'। प्रधानमंत्री हैं 'सैलेले मलियेले गाओई तुलिया एपा'।

पिछली शताब्दी के आठवें दशक में ईरान, लाओस, अफगानिस्तान, और मालदीव में राजतंत्रों की समाप्ति हुई। इनके पूर्व लिखिया, ट्यूनीसिया, इराक और इथियोपिया में भी राजतंत्र समाप्त हुए। इन राजतंत्रों के उन्मूलन में कहीं सैनिक विद्रोह हुए तो कहीं जन आन्दोलनों ने राजाओं को सिंहासन त्यागने के लिए बाध्य किया। ये परिवर्तन आमतौर पर रक्तरंजित हुए परन्तु राजतन्त्रों की समाप्ति की एक ऐसी भी घटना हुई है जो सामान्यत: अहिंसक रही और पूरा देश राजनीतिक रूप

स्पेन में राजतंत्र की पुनर्स्थापना जैसी रोचक घटना कम्बोडिया में भी हुई। फ्रांस से आजादी पाने के समय कम्बोडिया में राजतंत्र था और राजा सुरामृत थे। उनके उत्तराधिकारी राजकुमार नरोदम सिंह नूक ने गद्दी त्यागकर अपने देश को गणराज्य घोषित किया।

१९७० से १९७५ तक कम्बोडिया का नाम खमेर गणराज्य रहा। १९८९ में पुन: नाम कम्बोडिया कर लिया। इस बीच इस देश का नाम कम्पूचिया भी रहा।

मई १९९३ में इण्डोचायना के इस देश में बहुदलीय चुनाव हुए। वियतनाम समर्थित सरकार के स्थान पर एक नयी अन्तरिम सरकार गठित हुई। सितम्बर १९९३ में नया संविधान लागू हुआ और सिंह नूक पुन: राजगद्दी पर आसीन हुए। सिंह नूक के देहावसान के बाद अब वहाँ नरोदम सिंहमणि राजा हैं।

– इन्दौर (म. प्र.)

राम की सूझबूझ

चित्रकथा: देवांशु वत्स

अनूठा उपहार

– श्यामा गुप्ता 'दर्शना'

सुबह की खटपट, चिड़ियों की चहचहाहट से वैभव की नींद खुल गई। देखा अच्छी खाती धूप खिलखिला रही है। माँ को आवाज लगाते हुए जैसे ही रसोई में गया देखा माँ बर्तन साफ कर रही है। ''अरे! अरे!'' कहता हुआ वैभव माँ से बोला– ''माँ तेरा स्वास्थ्य ठीक नहीं है, महरी नहीं आयेगी क्या?''

वैभव को समझाती सी माँ मुस्कुराकर बोली– ''अरे बेटा! महरी दस बजे तक आयेगी तुझे चाय नाश्ता बनाने कुछ बर्तन तो चाहिये ना। वैसे मेरा स्वास्थ्य आज कुछ ठीक है।''

''नहीं माँ! रहने दीजिए, चाय मैं स्वयं बना लूँगा।'' कहकर माँ को पकड़ कर बिस्तर तक ले जा कर बैठा देता है।

वैभव के शाला जाने के बाद माँ सोचने लगी– ''वैभव कितनी मेहनत से पढ़ता है। मुहल्ले के बच्चों को भी पढ़ा देता है। जब देखो तब बच्चों से घिरा रहता है। कभी किसी का गृहकार्य करवाता है, तो कभी किसी को सवाल समझाता। और तो और पड़ोस में किसी का भी काम हँसते–हँसते करते ही रहता है। कभी किसी को मुसीबत में नहीं देख सकता। वैभव जब तीन वर्ष का था तब उसके बाबूजी नहीं रहे। कैसे पाला–पोसा है मैं जानती हूँ। बस कुछ ही दिनों की बात है पढ़–लिखकर अपने पैरों पर खड़ा हो जायेगा।

बाहर से आती आवाज से उनका ध्यान टूटा। वैभव का कोई मित्र आवाज लगा रहा था। जाकर देखा, शुभम् था। मैं बोली– ''अरे शुभम्! बेटे वैभव तो थोड़ा जल्दी ही शाला निकल गया शायद उसे रास्ते में कुछ काम था। तुम्हें कुछ काम था क्या बेटे?''

''नहीं नहीं काकी! कोई बात नहीं मैं शाला मैं ही उससे मिल लूँगा।'' कहता हुआ शुभम् अपनी कार में जाकर बैठ गया। उसे जाते देख मेरी आँखों ने नया सपना देखना शुरू कर दिया।

शाम को शाला से लौटने पर वैभव बोला– ''माँ! शुभम् घर आया था क्या? आज उसका जन्मदिन है। और कुछ मित्रों को अपने घर बुलाया है।''

माँ बोली– ''बेटा! वो तो बड़े घर का लगता है कार से आया था।'' ''हाँ माँ! है तो बड़े अधिकारी का बेटा, उसकी माँ भी बड़ी अधिकारी है, पर है बहुत मिलनसार।''

जब वैभव शुभम् के घर पहुँचा तो शुभम् को अकेला उदास सा बैठा देखकर बोला– ''क्यों भाई! जन्मदिन पर ये उदासी भला क्यों?''

शुभम् बोला– ''अरे भाई! आज मैंने घर पर ही

जन्मदिन का छोटा सा उत्सव रखा था। क्योंकि अपनी परीक्षा चल रही हैं, इससे सब गड़बड़ हो गया। इधर नौकर अचानक गाँव चला गया और माँ तो जल्दी नहीं आ सकती आज उनके कार्यालय में भी कुछ आवश्यक काम है। शायद बिदाई समारोह है। पिताजी भी अपने मित्र को छोड़ने हवाई अड्डे गये हैं।

मैंने अपने तीनों मित्रों को तो फोन से आने को मना कर दिया। बस तुम्हें सूचना नहीं दे पाया। सोच रहा था ड्राईवर के आने पर मैं स्वयं जाकर तुम्हें आने को मना कर आऊँ, पर ड्राईवर भी अभी तक नहीं आया। क्षमा करना मित्र! मैं तुम्हें समय पर सूचना नहीं दे पाया। तुम्हारा व्यर्थ में समय बिगाड़ दिया। जन्मोत्सव अब परीक्षा समाप्त होने पर कर लेंगे।''

''ओफ्फ ओ, भाई मेरे! इसमें क्षमा माँगने या समय व्यर्थ करने की क्या बात, उत्सव में खाना–पीना ही तो आवश्यक नहीं है। क्या इनके बिना जन्मदिन नहीं मनता। अरे भाई! मेरे चल तीनों मित्रों को फोन कर हम सब मिलजुल कर, नाच–गाकर अन्त्याक्षरी और चोर–सिपाही खेलकर शानदार जन्मदिन मनायेंगे। वैसे भी कितने दिन हो गये हम सबने मिलकर ना कैरम खेला है न चोर सिपाही। भला ऐसा अवसर मिला है तो क्यों छोड़ा जाये?''

शुभम् ने अपने तीनों मित्रों को भी बुला लिया। देर रात तक सभी ने मिलकर खूब मस्ती की। शुभम् की उदासी कहाँ खो गई पता ही नहीं चला।

वैभव बोला– ''अब काफी रात हो गई कल परीक्षा की भी तैयारी करनी है, हम लोग अब चलते हैं अच्छा शुभम्! जन्मदिन की शुभकामनाएँ।'' वे कहते हुए निकलने वाले ही होते हैं कि शुभम् की माँ हाथ में बड़ा सा मिठाई का डिब्बा लिये और पिताजी फल और नमकीन के पैकेट लिये आते हुए बोले– ''नहीं बच्चो! अभी लड्डू बँटेंगे सभी नाश्ते का मजा लेंगे तब मनेगा तुम्हारे शुभम् का जन्मदिन समझे बच्चो!''

सभी ने मिलकर मिठाई खाई और प्रसन्नता से शुभ जन्मदिन कहते हुए जन्मदिन मनाया।

माँ बोली– ''बच्चो! तुम सबने खेलकूद कर नाच–गाकर जो शुभम् का जन्मदिन मनाया वो भी हमारी अनुपस्थिति में वास्तव में तुम सभी बधाई के पात्र हो।''

शुभम् बोला– ''माँ! मैं तो बड़ा उदास हो गया था। मित्रों को भी मना कर दिया था, वो तो वैभव की सूझबूझ और समझदारी से हम सबने मिलकर मेरा जन्मदिन अनोखे ढंग से मना कर मुझे जन्मदिन का अनोखा उपहार देकर मुझे गद्गद् कर दिया।

– भोपाल (म. प्र.)

मोटेराम भूत

– कु. अन्विशंकर गुप्ता

एक राम नाम का लड़का था। वह बहुत मोटा था। घरवालों ने नाम तो उसका अच्छा रखा था, लेकिन लोगों ने उसके मोटापे के कारण उसका नाम बिगाड़कर मोटेराम कर दिया था। सारे बच्चे उसे चिढ़ाते रहते। राम को बहुत बुरा लगता, पर वह किसी से कुछ नहीं कह पाता।

असल में वह आलसी था और दिनभर कुछ न कुछ खाता रहता था। एक बार सारे बच्चे साइकिल दौड़ कर रहे थे। राम ने भी उसमें हिस्सा लिया। वह तेजी से साइकिल नहीं चला पा रहा था और हाँफ भी रहा था। यह देखकर उसके सारे मित्र उस पर हँसने लगे। राम को बहुत बुरा लगा।

वह रोते–रोते घर पहुँचा। माँ ने जब सारी बात सुनी तो किसी तरह समझा–बुझाकर उसका रोना बंद करवाया। अगले दिन राम पॉपकॉर्न खाते हुए टीवी देख रहा था। शाम हो गई थी। माँ ने पूछा कि आज तुम खेलने नहीं जाओगे क्या? तो राम ने उल्टे उन्हीं से कह दिया कि माँ, आज मेरे बदले तुम्हीं खेलने चली जाओ न! यह सुनकर माँ ने अपना सिर पीट लिया।

राम की तो आदत ही पड़ गई थी टीवी देखते हुए भोजन करने की। जब माँ खाने को नहीं देती, तो वह स्वयं चुपके से निकाल लेता। एक दिन वह पॉपकॉर्न निकाल रहा था, इस चक्कर में कुछ पॉपकॉर्न गिर गए। जब माँ ने पूछा कि किसने गिराए, तो राम ने कहा– ''भूत ने।'' और वहाँ से भाग गया। माँ भी बेलन उठाकर ''ठहर बदमाश'' कहते हुए उसके पीछे भागी। लेकिन वह कहीं जाकर छिप गया।

माँ उसके आलस और पेटूपन से परेशान हो चुकी थी। उन्होंने अपनी छोटी बहन से कुछ उपाए पूछा। राम की मौसी ने कहा– ''कि तुम खाने की चीजें छिपाकर रखा करो।'' माँ ने सोचा कि ऐसा भी करके देखते हैं। लेकिन राम कहाँ मानने वाला था। एक बार दुपहर में माँ आराम कर रही थी, तभी राम किचन में घुस गया और खोजबीन करने लगा। वह सभी डिब्बों को खोल–खोलकर देख रहा था। तभी अलमारी हिली और उसके ऊपर रखी थैली आधा गिर गया। उस थैली में आटा रखा हुआ था।

सारा आटा राम पर गिर गया था। राम सिर से पाँव तक आटे में नहाया हुआ सफेद भूत बना खड़ा था। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह क्या करें। इस बीच आहट सुनकर माँ की नींद खुल गई। उनको लगा कि रसोई में बिल्ली आई है। जब वो वहाँ पहुँची तो राम की हालत देखकर हँसते हुए बोली– ''अच्छा! तो ये अपना भूत पॉपकॉर्न चुराकर ले जाता है।'' राम को अपनी हरकत पर बहुत शर्म आ रही थी। वह सिर झुकाए खड़ा था। उसने कान पकड़कर शपथ ली कि वह अब से अधिक नहीं खाएगा और आलस भी नहीं करेगा।

– भोपाल (म. प्र.)

कविता

मिर्ची खा, फिर टेंटें कर

– रावेंद्रकुमार रवि

यह एक सर्कस की बात है। रीछ को नहाना था। सफाई करने वाले ने उसका पिंजरा खोल दिया। निकलते ही रीछ ने एक शरारत कर दी। उसने शेर का पिंजरा खोल दिया।

शेर को बढ़िया अवसर मिला। वह शहर की सैर को चल पड़ा। लेकिन चलते–चलते उसने तोते की बात मान ली और तोते का पिंजरा खोल दिया। पिंजरे से बाहर आते ही तोते ने देखा– इन सब बातों से अनजान सफाई करने वाला शेर के पिंजरे में घुस रहा है। उसे पिंजरे की सफाई करनी थी। तोते ने रीछ की तरफ इशारा किया। पलक झपकते ही रीछ ने शेर के पिंजरे का दरवाजा बंद कर दिया। अब पिंजरे में शेर की जगह सफाई करने वाला था। तोता तेजी से रसोईघर में गया। वहाँ रखी तीखी लाल मिर्च उठा लाया। मिर्च उसने पिंजरे में डाल दी। फिर पिंजरे के चक्कर लगाते हुए सफाई करने वाले को चिढ़ाने लगा–

बहुत बड़ा तू कवि बनता था, कविता मुझे सुनाता था।
स्वाद–भरे फल खुद खाता था, मिर्ची मुझे खिलाता था।
अब तू इसमें बंद रहेगा,
निकल नहीं तू पाएगा।
सारे फल अब मैं खाऊँगा,
तू बस मिर्ची खाएगा।
जितने मुझे सिखाए करतब, अब तू उतने कर करतब।
ऊपर से नीचे आ पहले, नीचे से ऊपर जा अब।
कभी पैर के बल तू चल ले,
कभी लटककर झूला झूल।
बहुत सताया तूने मुझको,
बेटा! इसको कभी न भूल।
मुझसे जो बुलवाया तूने, वह सब मैंने बोल दिया।
अब तू दिखा बोलकर वैसा, जैसा मैंने बोल दिया।
टेंटें कर, फिर मिर्ची खा,
मिर्ची खा, फिर टेंटें कर।
टेंटें कर, फिर मिर्ची खा,
मिर्ची खा, फिर टेंटें कर।

– खटीमा (उत्तराखण्ड)

श्री श्री पेटूराम

– शिवचरण चौहान

श्री श्री महाभूखन श्री श्री १००८ खाऊवीर पेटूराम का नाम लेते ही मेरे दिमाग में गड़बड़–सड़बड़ होने लगती है। वे वह सवा चार फुट के नीम की टहनी से पतले–दुबले जवान हैं पर उनका साढ़े दस फुट व्यास का पेट उनसे सारे शरीर की शोभा है और जब वह पूरी तरह भरा होता है तो ऐसा लगता है मानो टनाटन नगाड़ा। उस समय अगर कोई चींटी उनके पेट पर चढ़ जाए तो वह इतना तनकर चिकना होता है कि वे देर–सवेर फिसलकर धड़ाम से जमीन पर गिर पड़ेगी।

पेटूराम जी जन्म ही भूख लेकर पैदा हुए और अब तक भूखे हैं। उनके जन्म के बारे में कहा जाता है कि जब वे पैदा हुए तो महाकवि तुलसीदास की तरह 'राम–राम' कहने के बजाय 'भूख–भूख' चिल्लाए थे।

जन्म से ही दाँत लेकर आने वाले तुलसीदास तो आगे चलकर एक महान कवि हुए लेकिन पेटूराम जी ने अपने ही क्षेत्र में नाम कमाया। भला वे पीछे कैसे रहते? अखिल भारतीय ''खाऊवीर'' प्रतियोगिता में प्रथम स्थान पाकर उन्होंने सबसे अधिक खाने पर स्वर्ण पदक प्राप्त किया। तो उनके नाम की पताका गली–मोहल्लों से लेकर देश–परदेश तक लहराने लगी।

पेटूराम जी सुबह से लेकर शाम तक चालीस आदमियों के बराबर खाना खा जाते हैं। पर उनका कहना है कि वे फिर भी भूखे रहते हैं वे इसीलिए भगवान को अड़ाम–बड़ाम कहा करते हैं कि उसने रात क्यों बनाई। यदि रात में सोने की विवश्ता न होती तो वह दिन–रात खाते ही रहते।

पेटूराम जी अगर कहीं स्नेहभोज के लिए जाते हैं तो वे साढ़े पाँच आदमी किराए पर ले जाते हैं जो पेटूराम के भोजन करने के बाद उनका पहाड़–सा पेट थामकर उनके घर तक पहुँचा जाते हैं।

बात अभी कुछ दिन पूर्व की है। जब लंदन में 'विश्वकप खाऊ महावीर प्रतियोगिता' हुई थी। पेटूराम को उसमें सादर निमंत्रित किया गया। पेटूराम जी जब हवाई जब हवाई जहाज द्वारा लंदन जाने लगे। तो उनकी पत्नी ने उन्हें शपथ दिलाई कि वो विश्वविजेता बनकर ही उन्हें मुँह दिखाए। पेटूराम ने अपनी पत्नी को वचन दिया और दारासिंह की तरह चल दिए अकड़ते–ऐठते।

लंदन में उन्होंने विश्वकप खाऊ महावीर प्रतियोगिता जीत ली। उन्होंने अपने निकटतम प्रतिद्वंदी

चीन के श्री चाऊ माऊ खाऊ से पाँच सौ सवा इक्कीस रोटियों से भी अधिक रोटियाँ खाकर उन्हें पछाड़ दिया और विश्वकप अर्जित कर लिया।

पेटूराम जी जब ओलम्पिक विजेता बनकर विश्वकप अर्जित करके स्वदेश लौटे। तो हवाई अड्डे पर उनके स्वागत के लिए देश के गणमान्य व्यक्ति खड़े थे। कुछ पत्रकारों व फोटोग्राफरों ने विशेष भेंट वार्ताएं लीं और उनके अजीबो–गरीब पेट के फोटो भी लिए। हवाई अड्डे से उनका घर कुछ दूरी पर ही था इसलिए वे पैदल अपने घर चल पड़े। ग्यारह लोगों ने उनका ड्रम सा पेट सम्भाल रखा था। जब वह अपने घर के दरवाजे पर पहुँचे तो उनकी पत्नी अपनी सखियों समेत आरती का थाल सजाए खड़ी थी। पेटूराम को सकुशल आते देख उसने आरती का थाल फेंक दिया और रोने लगी।

उसको इस शुभ अवसर पर रोते देख सभी अचकचा उठे। स्वयं पेटूराम भी भौचक्के हो गए। पेटूराम बोले– ''अरी! भागवान तू रोती क्यों है मैं तो विश्वविजेता बनकर आया हूँ।'' पत्नी रोती हुई बोली– ''अरे! तुम विश्व ओलम्पिक विजेता बनकर भी ठीक–ठाक घर वापस आ रहे हो। मेरे बप्पा तो एक परमभोज में खाने गए थे तो पच्चीस आदमियों के सिर पर चढ़कर बेहोश घर आए थे और उन्हें साढ़े पन्द्रह दिन में होश आया था।''

पत्नी के मुँह से ऐसे वचन सुनकर पेटूराम मुस्कुराते हुए बोले– ''अरी! मुझे तेरे विधवा होने का डर था वरना मैं इसना खाता कि खाते–खाते शहीद हो जाता और सारे रिकार्ड तोड़ देता।''

यह सुनकर उनके साथ आई भीड़ ने कानफोड़ू ठहाका लगाया और पेटूराम अपने विश्व विजयी पेट पर हाथ फेरते हुए घर के अंदर चले गए।

– कानपुर (उ. प्र.)

संस्कृति प्रश्नमाला

- *लंका में हुए महासमर में कुंभकर्ण का वध किसने किया?*
- *अपने वनवास काल में पाण्डवों ने किस गन्धर्व से कौरवों को मुक्त कराया?*
- *ब्रुनेई के सुल्तान कुछ वर्षों पहले तक कौन सी पदवी लगाते थे?*
- *भीमा नदी के तट पर स्थित किस नगर में प्रसिद्ध विट्ठल मंदिर है?*
- *छत्रपति शिवाजी महाराज का राज्याभिषेक किस तिथि को हुआ?*
- *धार (मध्यप्रदेश) का जंग–रहित लौह स्तम्भ जिसे मुस्लिम हमलावरों ने तोड़ दिया था, की ऊँचाई कितनी थी?*
- *१८५७ के प्रथम स्वतंत्रता संग्राम के कुछ वर्षों बाद ही पंजाब में भारत की स्वतंत्रता का प्रबल प्रयत्न किसने किया?*
- *मारवाड़ के वे वीर सेनापति कौन थे जिन्होंने अपने जीवन–काल में ५२ युद्ध लड़े तथा सभी में विजय प्राप्त की?*
- *भारत के उत्तर–पूर्व के आठ राज्यों को उनकी भौगोलिक स्थिति के कारण किस नाम से जाना जाता है?*

(उत्तर इसी अंक में)

(साभार : पाथेय कण)

सचित्र विज्ञान चर्चा- संकेत गोस्वामी

दिलचस्प बातें दिल की

मानव भ्रूण के विकास काल के 23वें दिन, जब वह भ्रूण मां के पेट में सिर्फ मटर के दाने के बराबर होता है, उसका दिल धड़कना आरंभ करता है और यह उम्र भर धड़कता रहता है।
दिल यानी हृदय का औसत वजन 12 औंस (लगभग 400 ग्राम) तथा आकार में यह 6 इंच लंबा और 4 इंच चौड़ा होता है।

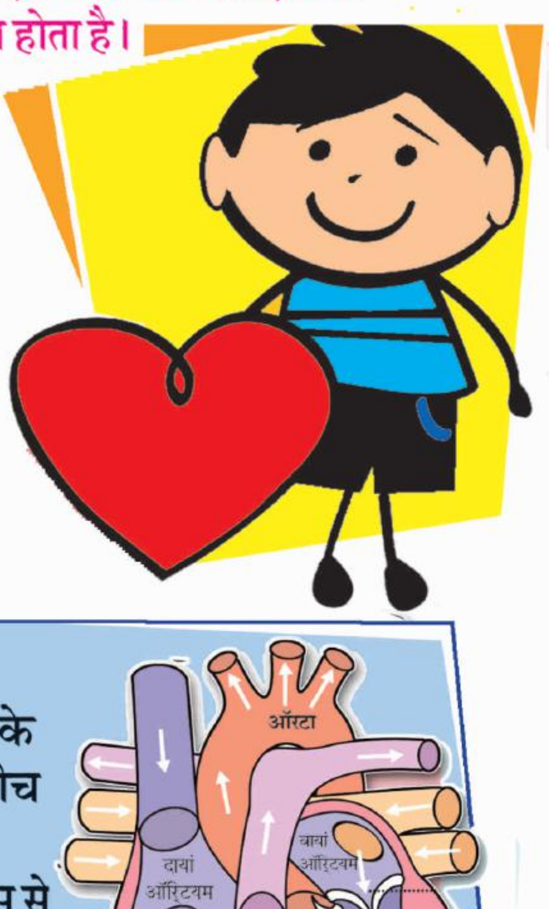

बच्चे के जन्म के समय उसका हृदय एक मिनट में 140 बार धड़कता है। जैसे-जैसे उम्र बढ़ती जाती है, उसकी धड़कन की गति कम होती जाती है।

दिल की धड़कन का चक्र ऑरिटयम के संकुचन से प्रारंभ होता है, जबकि इस बीच वेंट्रिकल्स आराम कर रहे होते हैं। ऑरिटयम के संकुचन में 0.11 सैकेंड्स से 0.14 सैकेंड का समय लगता है। इसके बाद 0.66 सैकेंड तक वे आराम करते हैं। अर्थात पूरे 24 घंटे में वे साढ़े तीन से चार घंटे तक कार्य करते हैं और लगभग 20 घंटे आराम। वेंट्रिकल्स को संकुचन में 0.27 सैकेंड से 0.35 का समय लगता है। इसके बाद वे 0.45 सैकेंड से 0.52 सैकेंड तक आराम करते हैं अर्थात 24 घंटे में साढ़े आठ से साढ़े दस घंटे कार्य करते हैं और साढ़े 13 से साढ़े 15 घंटे आराम।

यदि आदमी औसतः 60 वर्ष तक जीवित रहे तो उसके जीवन काल में दिल लगभग 3 अरब बार धड़केगा।

हालांकि हृदय का वजन शरीर के कुल वजन का 200 वां भाग होता है, लेकिन अपने पोषण के लिए उसे हर समय उस शरीर के कुल रक्त के 20वें भाग की आवश्यकता होती है।

और क्या तुम्हें ये पता है ?

प्रतिदिन हमारा हृदय इतना खून पंप करता है कि 4000 गैलन क्षमता वाला टैंक आसानी से भर जाए। मानव शरीर में हृदय खून का एक पूरा दौरा 23 सैकेंड में पूरा कर देता है। मनुष्य का हृदय जीवन भर जितना काम करता है, उतने श्रम से एक मालगाड़ी को यूरोप के सबसे ऊंचे पहाड़ माउंट ब्लैक, जिसकी ऊंचाई 4810 मीटर है, तक पहुंचाया जा सकता है।

एक वयस्क का दिल आराम करते समय औसतन प्रति मिनट 76 बार धड़कता है, लेकिन कठिन शारीरिक श्रम करते समय धड़कन की गति ढाई गुना तक बढ़ सकती है। आराम की व्यवस्था में भी हृदय प्रति मिनट 6 लीटर खून पंप करता है अर्थात 6 से 10 टन प्रति दिन। पूरे जीवन काल में यह डेढ़ से ढाई लाख टन खून पंप करता है।

दिल की हर दो धड़कनों के बीच 1/6 सैकेंड का विश्राम होता है। इसका तात्पर्य है कि हृदय पूरी जिंदगी का 1/6 हिस्सा आराम करता है।

समाप्त

सेकेण्ड लेफ्टीनेन्ट अरुण खेत्रपाल

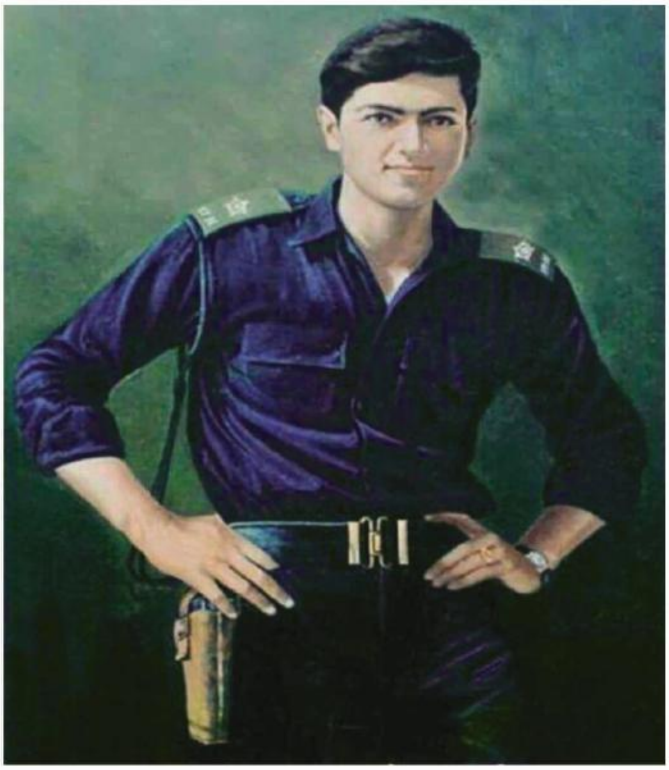

१४ अक्टूबर १९५० को महाराष्ट्र के पुणे में जन्मा बालक अरूण जितना पढ़ने में तेज था उतना ही क्रिकेट में। लेकिन नियति ने इसके लिये यह निश्चित किया कि यह खेल से मैदान मैं विरोधी दल को आउट न करें बल्कि युद्ध के मैदान में शत्रु सेनाओं को आउट करने में महारत प्राप्त करे। संभवत: इसी कारण पूना हॉर्स में वे सेकेंड लेफ्टीनेन्ट के रूप में सम्मिलित हुए और युद्ध अवसर भी शीघ्र ही मिल गया। १३ जून १९७१ को वे पूना हॉर्स में आए और ३ दिसम्बर १९७१ को भारत–पाक युद्ध में वे अपनी स्क्वाड्रन की कमान सम्हालते हुए रणक्षेत्र में डटे थे। १६ दिसम्बर अरुण खेत्रपाल शक्करगढ़ सेक्टर के जरपाल की सीमा पर एक दूसरे स्क्वाड्रन की सहायता करने स्वयं टैंक पर सवार हो आदेश मिलते ही कूच कर गए। दुश्मन के टैंकों को धूल में मिलाते वे पाकिस्तानी सेना की धुंआधार सुताई कर रहे थे। भयंकर टैंक युद्ध में अरुण खेत्रपाल ने चार पाकिस्तानी टैंकों को स्वयं नष्ट करते हुए अपने उपनाम खेत्रपाल (क्षेत्रपाल) को सिद्ध किया। लेकिन तभी एक टक्कर में उनका टैंक भी जलने लगा। टैंक छोड़ने का आदेश मिला पर तब तक ''अभी मेरी गन काम कर रही है।'' कहते हुए यह रणबांकुरा दुश्मन का एक और टैंक समाप्त कर चुका था। दुर्दैव से तभी एक गोला और गिरा और अरुण खेत्रपाल बिखरकर मातृभूमि की रज में मिल गए। युद्ध तो अगले दिन भी चला, पाक हारा भी, बाँग्लादेश के रूप में उसके टुकड़े भी हुए अरुण खेत्रपाल को **'परमवीर चक्र'** से विभूषित करते हुए राष्ट्र उन्हें श्रद्धांजलि देकर स्वयं को ढाढस देता रहा।

–

ज्यामिति आकृति बनाओ

– राजेश गुजर

बच्चो, इन वृत्तों के केन्द्र में बने बिन्दुओं को सरल रेखा से ज्यामितीय आकृतियाँ ऐसे बनाओ कि २ वर्ग, १२ त्रिभुज, १ अष्टभुज एवं ४ षट्भुज बने।

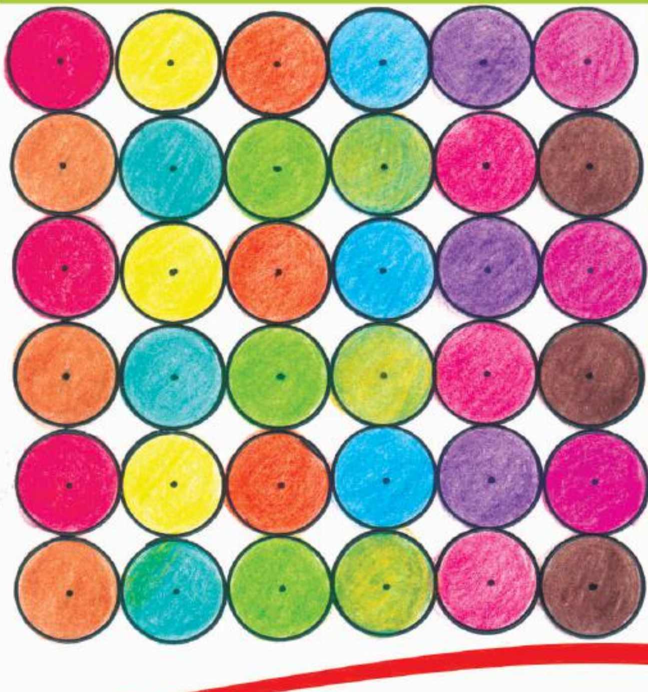

जैसा करोगे वैसा भरोगे

– नीरज कुमार मिश्रा

नानू, चिंटू, संतोष, अखिल और आकाश ये सब आपस में बहुत ही गहरे मित्र थे।

विद्यालय से आने के बाद सारे मित्र मोहल्ले के सामने बने खेल मैदान पर एकत्रित होते और जम कर खेलते, कभी क्रिकेट तो कभी कबड्डी कभी शारीरिक व्यायाम भी करते।

उसी खेल के मैदान के सामने, एक कोने में एक छोटा सा मकान था, जिसमें दिन के समय कोई नहीं दिखता था, बस रात को कोई बूढ़ा सा व्यक्ति आता और सुबह के समय फिर कही चला जाता।

उस बूढ़े के मकान की विशेषता यह थी की उसका आँगन बहुत बड़ा था जो कि इन मित्रों की लुका–छिपी आदि खेलों में सहायता करता तथा गर्मी में छाया में आराम करने का अड्डा भी यही होता।

एक शाम की बात है जब ये सारे मित्र खेलने के बाद उसके आँगन में बैठे आराम कर रहे थे तभी चिन्टू को एक शैतानी सूझी, उसकी दृष्टि आँगन में लगे बिजली के बल्ब पर गयी।

''चलो मित्रो! आज एक अलग खेल खेला जाये। यह जो ऊपर बल्ब लगा हुआ है न, हमें इस पर निशाना लगाना है, और जो इस गेंद से इस बल्ब को तोड़ देगा वही आज से हमारे समूह का कप्तान भी कहलायेगा।'' चिन्टू ने चुनौती देते हुए कहा।

फिर क्या था एक के बाद एक सभी अपना निशाना साधने लगे बल्ब को फोड़ने में, और कुछ ही देर बाद भक्क की आवाज के साथ बल्ब फूट गया। उसका सारा काँच भी वहीं धरती पर बिखर गया। और बल्ब तोड़ने वाला कोई और नहीं चिन्टू ही था और अब वह समूह का कप्तान भी बन गया, बल्ब फोड़ने ने उसे एक विजयी अनुभव कराया और अब वह सबसे आगे तन कर चल रहा था। कल फिर मिलने का वादा

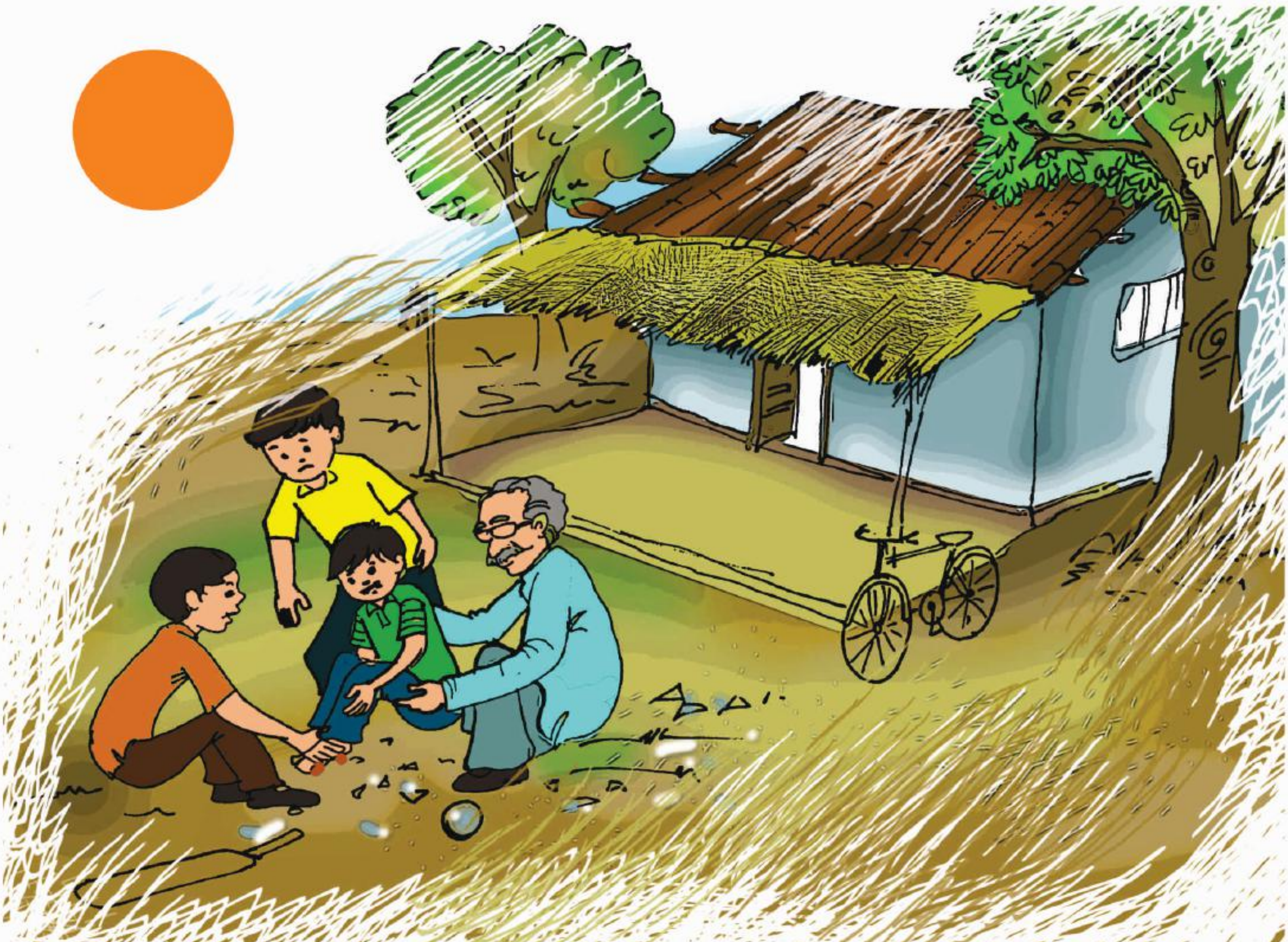

करके सभी मित्र अपने–अपने घर चले गए।

अगली सुबह रविवार था इसलिए मित्रों की टोली सुबह से ही मैदान पर पहुँच गयी और दे दनादन क्रिकेट का खेल शुरू हो गया। संतोष की बैटिंग चल रही थी और नानू बॉलिंग कर रहा था, संतोष ने एक ऐसा जमा के शॉट मारा कि गेंद उसी घर के आँगन में चली गयी जहाँ कल उन लोगों ने बल्ब तोड़ा था।

चिन्टू भागते–भागते गेंद के पीछे पहुँचा तो अचानक दर्द से कराह उठा। उसने नीचे देखा तो पाया कि जल्दबाजी में वह नंगे पैर ही गेंद के पीछे दौड़ आया था और उस बल्ब की कांच चिन्टू के पैरों में चुभ गयी थी, चिन्टू दर्द से कराहे जा रहा था और उसकी आँखों से आँसू भी गिरे जा रहे थे। सारे मित्र भी अब एकत्रित हो गए थे और समझ में नहीं आ रहा था कि बल्ब की काँच कैसे निकाला जाए।

आँगन में आहट सुनकर अंदर से एक बाबाजी निकले। सामने का दृश्य देखकर बोले– ''क्या बताऊँ बच्चो! कल मेरे आँगन का बल्ब न जाने कैसे फूट गया, कल रात जब मैं आया तो बल्ब फूटा होने के मैं नीचे रखे गमले से टकरा गया जिससे मेरे घुटने में चोट लग गयी। बल्ब के काँच से मेरी साइकिल भी पंक्चर हो गयी है। वैसे तुम लोग मत घबराओ, मैं एक सेवानिवृत्त डॉक्टर हूँ, मैं अभी तुम्हारा काँच निकाल कर तुम्हें दवा दे देता हूँ, घाव शीघ्र ही भर जायेगा।'' बाबाजी ने चिन्टू की मरहम पट्टी की।

चिन्टू अब भी रो रहा था वह सोच रहा था कि खेल–खेल में ही सही पर बिना सोचे समझे उसने जो शैतानी की, उसने कितने लोगों का नुकसान किया। बाबाजी के घुटने में भी चोट लगी, उनकी साइकिल भी पंक्चर हुई, और स्वयं चिन्टू को भी काँच चुभ गयी और अब विद्यालय का भी नुकसान होगा सो अलग।

चिन्टू और उसके मित्र बार–बार बाबाजी से क्षमा मांग रहे थे। ''हमें केवल अपने आनंद के लिए ही किसी की भी हानि नहीं करना चाहिए, हो सकता है जो गड्ढा हम दूसरों के लिए खोदे, हम स्वयं ही उसमें गिर जाए।'' चिन्टू और उसके मित्रों ने अपने कान पकड़े और कहा कि आगे से हम कोई भी काम करने से पहले दो बार विचार करेंगे और कोई ऐसा काम नहीं करेंगे जिससे किसी को भी असुविधा हो।

– पलिया कलाँ (उ. प्र.)

आपकी पाती

आदरणीय संपादक जी, प्यार भरी सत श्री अकाल। मुझे बाल साहित्य पढ़ते हुए तो ४० वर्ष से अधिक ही हो गए हैं। आपकी सचित्र पत्रिका के प्रकाशन को भी ४ दशक हो चुके हैं। मगर मैंने इसकी बहुत कम पत्रिकाएं पढ़ी है। इसकी छपाई, कागज, व चित्रात्मकता बच्चों के साथ–साथ बड़ों को भी प्रभावित करती है। इतने अच्छे प्रकाशन के लिए मैं सरस्वती बाल कल्याण न्यास का आभारी हूँ।

– भूपिंदर सिंह आशट
घग्गा (पंजाब)

गणित का शिक्षक

– डॉ. श्याम मनोहर व्यास

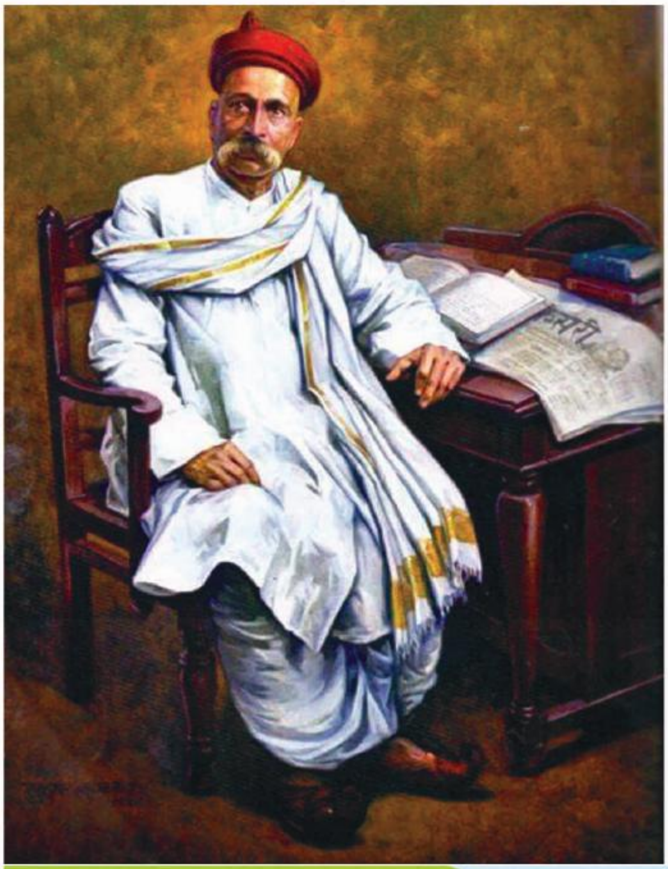

एक बार लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक से उनके एक मित्र ने पूछा- ''यदि भारत स्वतंत्र हो जाए तो आप कौन सा पद ग्रहण करना चाहेंगे?'' तिलक ने उत्तर दिया- ''मैं किसी विद्यालय में गणित का शिक्षक बनकर छात्रों को गणित पढ़ाना पसन्द करूँगा क्योंकि गणित ही विज्ञान की जननी है। साथ ही वैदिक गणित पर भी खोज कार्य करूँगा।''

ऐसे उच्च विचार थे लोकमान्य बाल गंगाधर तिलक जी के।

- उदयपुर (राजस्थान)

कविता

मस्तराम हाथी

– दिशा ग्रोवर

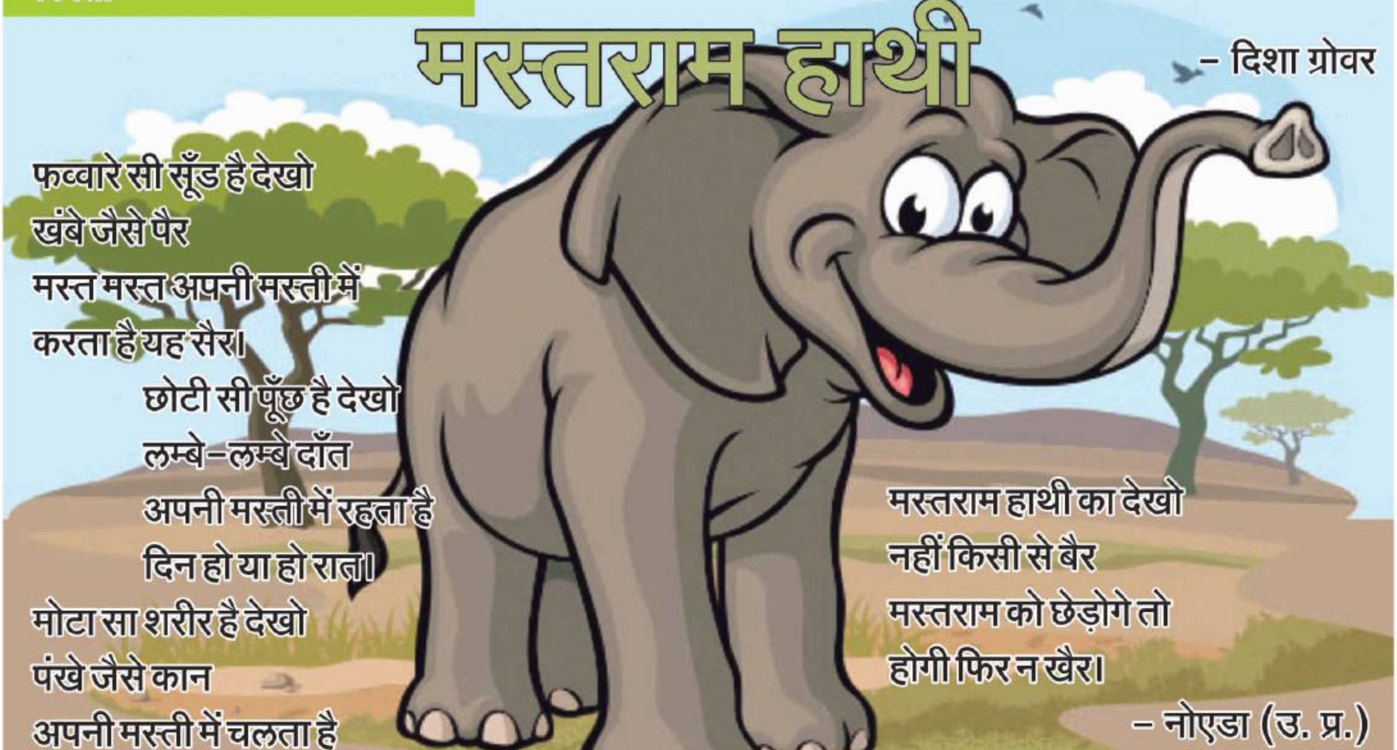

फव्वारे सी सूँड है देखो
खंबे जैसे पैर
मस्त मस्त अपनी मस्ती में
करता है यह सैर।

छोटी सी पूँछ है देखो
लम्बे–लम्बे दाँत
अपनी मस्ती में रहता है
दिन हो या हो रात।

मोटा सा शरीर है देखो
पंखे जैसे कान
अपनी मस्ती में चलता है
राजा जैसी शान।

मस्तराम हाथी का देखो
नहीं किसी से बैर
मस्तराम को छेड़ोगे तो
होगी फिर न खैर।

– नोएडा (उ. प्र.)

अंगूर मीठे हो गए!

– डॉ. हूंदराज बलवाणी

एक नन्ही लोमड़ी जंगल में यहाँ–वहाँ घूम रही थी। जंगल में उसके बहुत सारे मित्र थे। सबके साथ खेलने में ऐसे खो गई कि उसे समय का पता न चला। अचानक उसे भूख सताने लगी। लोमड़ी ने चाहा कि कहीं से खाने की कोई चीज मिल जाए तो अच्छा। खाने की खोज में वह इधर–उधर घूमने लगी परन्तु उसे कहीं भी खाना नहीं मिला। भटकती हुई नदी के किनारे पहुँच गई। पास में एक बगीचा था। बगीचे में अंगूर के गुच्छे लटक रहे थे। अंगूर देखकर नन्ही लोमड़ी के मुँह में पानी आ गया। लेकिन अंगूर थे बहुत ऊँचाई पर। लोमड़ी अंगूरों तक पहुँचने के लिए कूदने लगी लेकिन उन तक पहुँच न पाई।

लोमड़ी खड़ी–खड़ी सोचने लगी कि अंगूरों तक कैसे पहुँचा जाय? तब धीरे–धीरे चलता हुआ एक कछुआ वहाँ आ गया। लोमड़ी से पूछा, ''तुझे भूख लगी है न?''

''हाँ, लेकिन तुम्हें कैसे पता चला?''

''तुझे अंगूरों की ओर उछलते देखा तो समझ गया।''

''हाँ, सचमुच मुझे भूख लगी है। यह अंगूर खाने को मेरा मन करता है।''

''लेकिन बहन, अंगूर तो बहुत ऊपर है।''

''यही तो चिंता है।''

''मेरी मानो तो बेकार का प्रयत्न मत करो और चुपचाप घर चली जाओ। तुम्हारी दादी ने भी तुम्हारी तरह अंगूरों तक पहुँचने का प्रयत्न करके देखा था, किन्तु वह उन तक पहुँच न पाई थी। इसलिए यों कहकर चली गई थी कि– अंगूर खट्टे हैं।''

''लेकिन मैं ऐसा नहीं कहूँगी। मुझे कुछ भी करके अंगूरों तक पहुँचना ही है। तुम यहाँ रुको। मैं अभी आई।''

कहकर नन्ही लोमड़ी वहाँ से चली गई। शीघ्र ही वह कहीं से एक तिपाई ले आई। तिपाई को अंगूर के गुच्छों के नीचे रखकर वह उस पर चढ़ गई। अब उसके

हाथ तो क्या मुँह भी गुच्छे तक पहुँचने लगा। तिपाई पर खड़ी रहकर मजे से अंगूर खाने लगी।

कछुआ तो यह सब देखकर अचरज में पड़ गया। फिर पूछा– ''अंगूर, खट्टे नहीं लगते?''

''खट्टे कैसे हो सकते हैं! मेहनत करके अंगूरों तक पहुँची हूँ अत: अब यह अंगूर खट्टे नहीं हो सकते मेरे भाई।''

– अहमदाबाद (गुजरात)

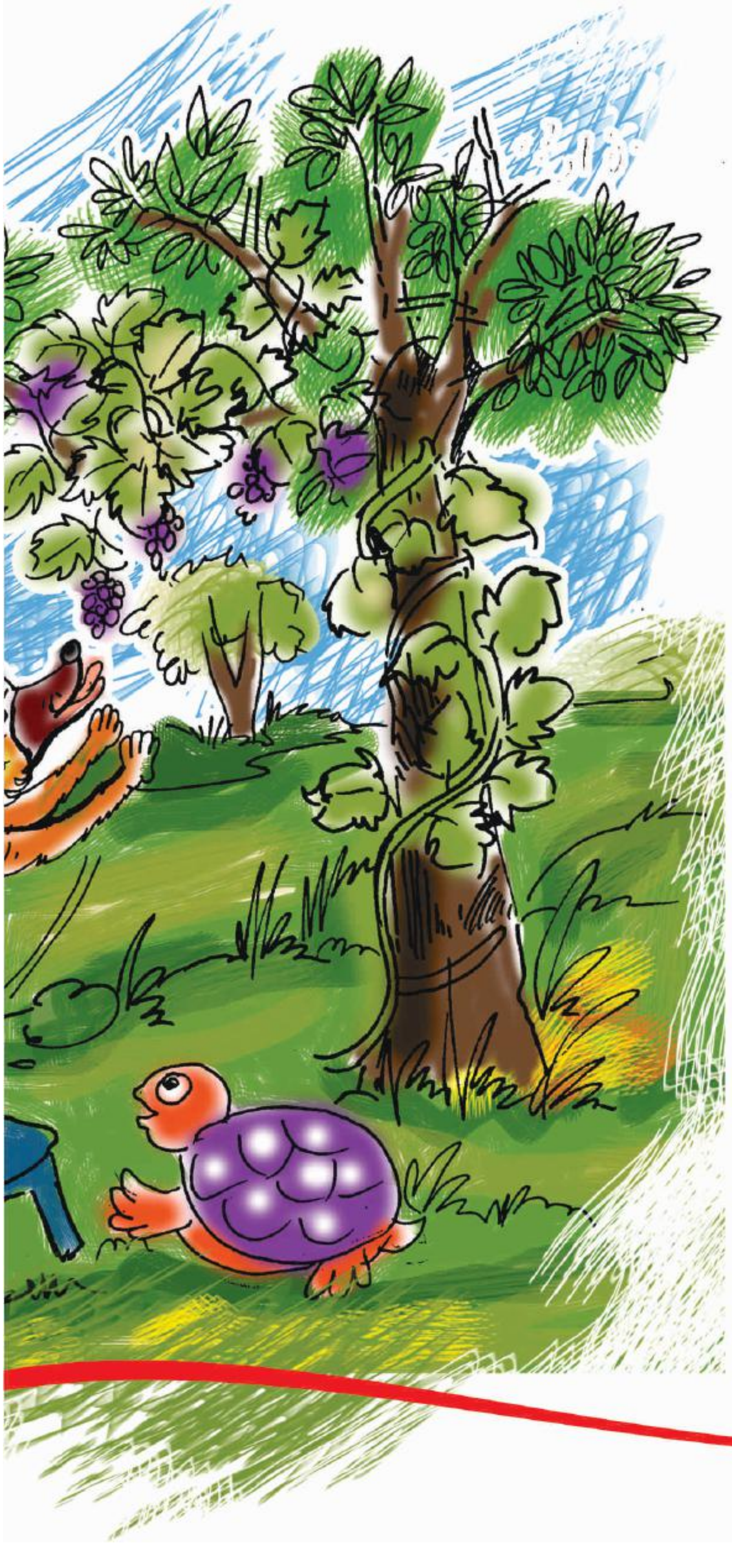

उत्तर ज्यामिति आकृति बनाओ

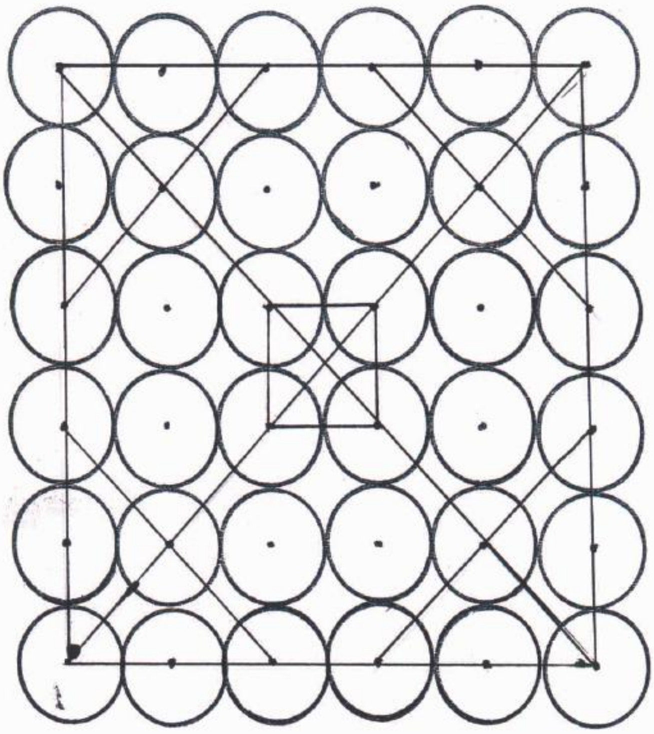

उत्तर संस्कृति प्रश्नोत्तरी

– भगवान श्रीराम, चित्रसेन, सेरी बगवान् (श्रीभगवान), पंढरपुर, बैसाखी, ज्येष्ठ शुक्ल १३(संवत् १७२७), ४३ फीट, संत रामसिंह कूका (कूका आंदोलन), राव जैता जी, अष्ट लक्ष्मी।

लोनार झील

– डॉ. बानो सरताज

लोनार झील महाराष्ट्र के बुलढाणा जिल के लोनार क्षेत्र में स्थित है। खारे पानी की झील है। आस-पास के क्षेत्रों के कुँओं का पानी मीठा है।

लोनार झील को 'प्रकृति का शाहकार' कहा जाता है। इस झील की गणना विश्व धरोहर (World Heritage) में होती है। यह झील अस्तित्व में कैसे आई? इस विषय में विभिन्न मान्यताएँ हैं।

प्रथम मान्यता के अनुसार उल्कापात के कारण झील निर्मित हुई। झील उल्कापात के गिरने के कारण बनने वाली तीसरी सर्वाधिक गहरी खाई अथवा गुफा है। एक अनुमान के अनुसार उल्कापात का पत्थर कम से कम ६०० मीटर की गहराई में धंसा होगा।

दूसरे विचारानुसार लोनार झील ज्वालामुखी के फटने से निर्मित हुई। ऐसी झील को क्रेटर (Crator) कहा जाता है।

लोनार झील का इतिहास बहुत पुराना है। ऋग्वेद और भागवत पुराण में इस का उल्लेख मिलता है।

विशेषताएँ–

लोनार झील की प्रमुख चार विशेषताएँ हैं।

(१) दहाले (मुख्य) अथवा हल्का (व्यास)

(२) लोनार (Rim)– लोनार झील का व्यास, दहाने पर ३० मीटर की ऊँचाई पर औसतन ४,८३० मीटर का शिखर (Crest) बनाता है। गहराई ६०० मीटर है।

(२) ढलान (Slope)– लोनार झील का ढलान सीधा (Steep) है। गहराई ४५० फीट है। ढलान पर २ झरने हैं जिन्हें 'धार' कहा जाता है।

(३) ढलान (Basin)– लोनार झील का ढलानी इलाका समतल है। दहाने एवं झील के मध्य थोड़ा सा ऊँचा है। धरती पर घने वृक्ष हैं। झील का पानी भले ही खारा हो, जमीन खोदने पर मीठा पानी प्राप्त होता है।

(४) झील का प्रमुख भाग (Main Part)– लोनार झील अण्डाकार है। इसका व्यास १३०० मीटर है। इसमें वर्षा का पानी एकत्र होता है। पानी खारा है, इस में सलफाइड की मात्रा १०.५% होती है।

लोनार झील भू-वैज्ञानिकों, पर्यावरण विद्, वनस्पति वैज्ञानिकों, पशु-विशेषज्ञों एवं पुरातत्व विभाग के लिए अध्ययन का उत्तम विषय है।

सन् २००० में लोनार झील के आसपास के क्षेत्र को सुरक्षित वन-जीवन आरक्षित (Wild Life Sanctuary) बना दिया गया। यह क्षेत्र १३८३ एकड़ का है। इसमें तेंदुआ, जंगली भेड़िए और मोर पाए जाते हैं।

– चन्द्रपुर (महाराष्ट्र)

मकड़ी का प्रीतिभोज

– संजीव कुमार आलोक

जंगल में एक गड्ढा था। उसमें पानी भरा हुआ था। उस गड्ढे में मेंढक, मच्छर, मक्खियाँ, केंचुए आदि सभी रहते थे। पास ही एक छोटे से झाड़ में मकड़ी रहती थी। एक दिन सबने निश्चय किया कि हम सब एक बढ़िया प्रीतिभोज का कार्यक्रम बनाये। बड़ी मजेदार बात थी। सब राजी हो गये। सभी के विचार–विमर्श से प्रीतिभोज की व्यवस्था मकड़ी को सौंपी गई। सभी ने कहा– ''हम सभी में मकड़ी ही सबसे चतुर है। अपने चाल में तरह–तरह के शिकार फंसायेगी और बढ़िया भोज देगी।''

मकड़ी ने सचमुच ही प्रीतिभोज की व्यवस्था बहुत बढ़िया ढंग से की। जब सभी भोज में आये तो मकड़ी ने एक आवश्यक बात कही। वह बोली– ''प्रीतिभोज से पहले सब पोखरे में जाकर हाथ–पैर स्वच्छ कर लें। गंदे हाथ–पैर वाले इस प्रीतिभोज में भाग नहीं ले सकेंगे।

सभी आगन्तुक तुरन्त पोखर पर गये और हाथ–पैर धोकर आ गये। लेकिन मेंढक परेशान था। वह पोखर में कई बार गया, लेकिन जब भी बाहर निकलता, उसके पैरों में कीचड़ लगा ही रह जाता। उसने बहुत प्रयत्न किया किन्तु हाथ–पैर स्वच्छ न कर सका। सभी उपस्थित अतिथि उसे कीचड़ में सना हुआ देखकर हँसते रहे।

मेंढक समझ गया था कि मकड़ी ने उसे नीचा दिखाने के लिए जान–बूझकर यह चाल चली है। उसने मन ही मन निश्चय किया कि वह मकड़ी को इस अशिष्टता का उत्तर अवश्य मिलना चाहिए। कुछ दिनों बाद मेंढक ने प्रीतिभोज दिया। उसने मकड़ी को भी बुलाया। प्रीतिभोज की व्यवस्था पोखर के अंदर पानी की तलहटी में किया गया था।

ठीक समय आने पर सभी अतिथि आ गये, किन्तु मकड़ी पोखर के ऊपर बैठी रही। मेंढक बोला– ''दीदी, जल्दी चलो तुम्हारे बिना प्रीतिभोज सूना–सूना लग रहा है।'' केंचुए ने कहा– ''दीदी, इतना बढ़िया भोजन है कि सुगंध से मेरी नाक फटी जा रही है।''

मकड़ी किसी तरह अपनी झेंप मिटा रही थी। भोज की बात सुनकर उसके मुँह में पानी आ रहा था, पर बेचारी विवश थी। वह यही कह सकी, ''आप लोग चलकर आरंभ कीजिए, मैं आती हूँ।''

सभी अतिथि पोखर के अंदर चले गये। मकड़ी पोखर के बाहर ही मंडराती रही, किन्तु वह भोजन का स्वाद न ले सकी। वह पानी के ऊपर से झाँक–झाँक कर रह जाती। नीचे सभी अतिथि उसे देखकर हँसते रहे और भोजन करते रहे। कहते हैं, आज भी मकड़ी मेंढक के प्रीतिभोज के लालच में पोखर के ऊपर जाल बुनती रहती है और भोज खाने का प्रयत्न करती है।

– बाढ़ (बिहार)

किसी की खाँसी, किसी की फाँसी

– डॉ. अमिताभ शंकर राय चौधुरी

रात काफी हो गई है। चारों ओर सन्नाटा। पर आजकल तो कोरोनावाली कोविड बीमारी के आतंक से सुबह से ही सड़क पर कोई चहल–पहल नहीं रहती। लोग बाग अपने चेहरों पर मास्क लगाकर केवल दूध या शाक–भाजी खरीदने ही निकल सकते हैं। चारों ओर पुलिस का पक्का पहरा।

''इतनी रात हो गई। सो क्यों नहीं जाता नीरज?'' बलराम बाबू ने अपने पोते को अपनी ओर खींच लिया। उन्हें साहित्य से बहुत लगाव है, तभी तो अपने पोते का नाम उन्होंने हिन्दी के प्रसिद्ध गीतकार गोपालदास 'नीरज' के नाम पर रखा है।

''नींद नहीं आ रही है, दद्दू! एक और कहानी सुनाओ।'' नीरज ने दादा के गले में अपनी बाँह डाल दी।

''अभी–अभी तो तुझे रवीन्द्रनाथ की 'काबुली वाला' कहानी सुनायी। ऐसे ही कहानी सुनता रहेगा तो कहीं सूरज यह न सोच बैठे कि– ''भाई! अभी तो भोर हुई ही नहीं है। वो उगेगा ही नहीं।''

''क्या करूँ दद्दू! इतने दिनों से विद्यालय बंद है। न बागीचे में खेलने ही जा सकता हूँ, न और कुछ।''

''हाँ बेटा, इस कोरोना के प्रकोप से तो सारी दुनिया थम गई है। लोग अपने–अपने घरों में बंद। रेल, हवाई जहाज सब बंद। किन्तु इस वायरस से तो लड़ना ही है। तभी न सबको एक–दूसरे के पास जाने को मना किया गया है। लोगों को बार–बार हाथ धोने को कहा जा रहा है। वायरस को रोकने के लिए किसी सामान को छूने के पहले हाथ में सैनिटाइजर लगाने को कहा जा रहा है।''

नीरज के पिताजी, माताजी, दादी और छोटी बहन 'दिया' सब अपने कमरों में सो रहे हैं। चीन के वुहान शहर से शुरू होकर यह अजीब बीमारी सारी दुनिया में फैल चुकी है। समस्या तो यह है कि यह वायरस मामूली खाँसी या छींक से ही दूसरे को अपनी चपेट में ले लेती है। नीरज आँखें बद कर सोने का प्रयत्न करने लगा। चारों ओर सन्नाटा। कभी कभार पुलिस की गाड़ी का सायरन बन रहा है। शायद उसकी पलकें एकबार लग गयी होंगी। तभी आचनक एक खटका हुआ। एक आवाज– टन्न्....

कमरे की धुँधली रोशनी में आँखें खोलकर नीरज चौकन्ना हो गया। फुसफुसाकर उसने बलरामजी से पूछा– ''यह आवाज कैसी है दद्दू?''

''चुप रह बेटा! लग रहा है यह आवाज हमारे ही दरवाजे की है।''

फिर से एक आवाज हुई –धप्प्...। लगा कोई चाहरदीवारी से अन्दर कूद गया।

''दद्दू, वह अंदर आ गया। ऐसे में इतनी रात गये कौन आयेगा? मुझे तो डर लग रहा है।''

''मेरा पोता होकर तू इतने से डर जायेगा? छि:! चल, खिड़की से जरा देख तो ले कि इस लॉक डाउन में कौन मेहमान हमारे घर पधारे हैं?''

बलराम बाबू चौकी से उतर कर खिड़की के पास जा खड़े हो गये। नीरज भी दादा से सटकर खड़ा होकर बाहर झाँकने लगा। ''अरे देखो दद्दू! वह रहा। वही

आदमी चाहरदीवारी पर चढ़कर अंदर कूद गया है। यह है कौन?''

''चुप मूर्ख कहीं के। समझ नहीं रहा है कि वो कौन है? और किसलिए हमारे घर पर इस रात अँधेरे आया है?''

''चोरी करने।'' नीरज ने ऐसे उत्तर दिया मानो वह ''कौन बनेगा करोड़पति'' कार्यक्रम के प्रश्न का उत्तर दे रहा है।

''और नहीं तो क्या वह तेरे लिए लड्डू लेकर आया है? कि मिठाई की दुकानें बन्द हैं, नीरज भैया! आज थोड़ा मुँह मीठा तो कर लीजिए।''

''अब क्या होगा?'' नीरज परेशान हो उठा, ''बाबूजी को बुलायें?''

''चुप, उन्हें सोने दे। देख, मैं कौन सा दाँव चलाता हूँ। एक समय में मैं भी अभिनय किया करता था, बच्चू!''

इतने में वह महाशय इधर–उधर देखते हुए पोर्टिको में खड़ी नीरज के पिताजी की स्कूटी के पास बैठ गया। फिर अपने झोले से उसने एक पाना निकाल लिया। और फटाफट स्कूटी का पिछला पहिया लगा खोलने।

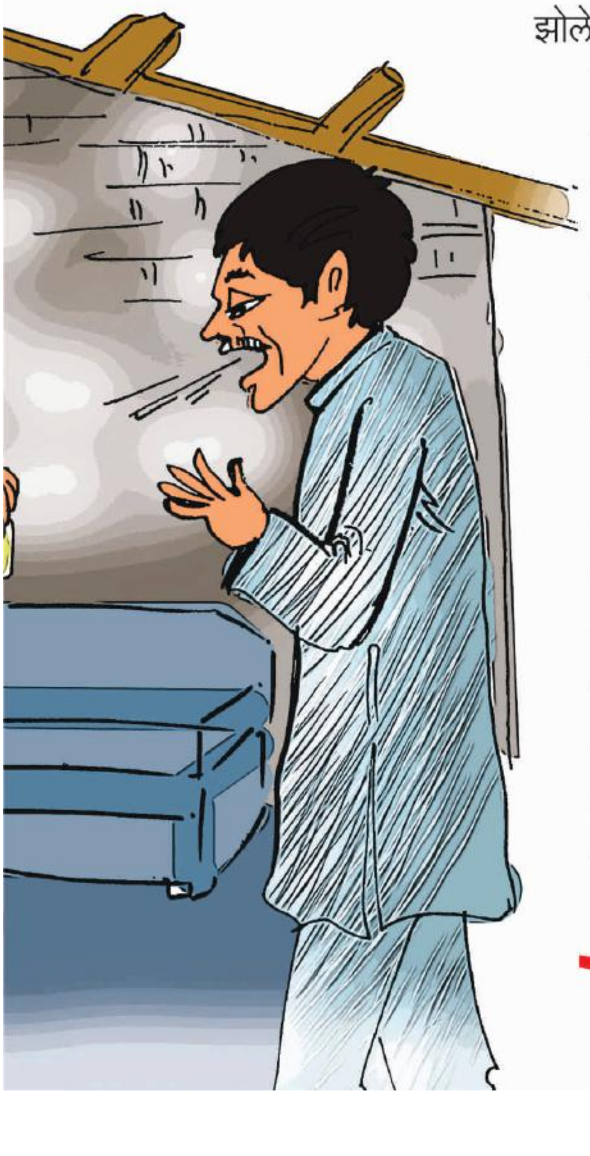

''अरे! देख तो सही मैं उसे उल्टे पाँव भगाता हूँ।'' इतना कहकर बलराम बाबू खिड़की से हटकर बड़ी जोर से छींकने लगे– ''छीं.... छीं.....।'' बाहर बैठा वह व्यक्ति थोड़ा चौंक उठा। तब तक अपना गला सहलाते हुए बलरामजी इतनी अधिक आवाज में खाँसने लगे कि लगा कहीं एलओसी में गोली चल रही है– खें....खें.....खें....।

उस आदमी से अब बैठा नहीं रह गया। बिलकुल खड़ा होकर वह अपना सर खजुआने लगा। मानो सोच में पड़ गया है कि क्या करें? सामान उठाकर भागे, या जान बचा ले आगे?

क्योंकि उन दिनों सभी को पता था कि खाँसने वाले से दूर रहो। उसकी किसी वस्तु को हाथ लगाये तो गये।

इतने में बलराम बाबू ने अपना आखिरी दाँव चलाया। खाँसते हुए वे जोर–जोर से कहने लगे, ''अरे, वो मि. हुंग चेंग फेंग को कल ही हमारे घर आना था? अरे बप्पा रे! कहीं मुझे वो कोरोना देकर नहीं न गया? अब क्या होगा?''

इतना सुनते ही वह आदमी मारे डर के खड़ा हो गया। अनजाने में उसके मुँह से निकला, ''अरे भाई! हमको बचाओ।'' तुरन्त अपने झोले से सैनिटाइजर की एक शीशी निकाल कर वह अपने हाथ पर मलने लगा। शायद घर से निकलते समय ही पूरी तैयारी के साथ चला था कि काम शुरू करने से पहले हाथ में लगा लेंगे। उसे भी तो ज्ञात था कि सावधानी हटी तो दुर्घटना घटी।

दोनों हाथ रगड़ते हुए अपना झोला उठाकर वह बेचारा काँपते हुए चाहरदीवारी पर चढ़ गया और बाहर कूद कर हवा हो गया।

हँसते हुए बलराम बाबू ने पोते से कहा– ''देख ली मेरी समझदारी? वह बच्चू भी समझ गया होगा – आज जान पर बन आई, भागने में ही भलाई! क्यों?''

''आपने तो कमाल ही कर दिया, दद्दू!''

दादा और पोता दोनों हाथ मिलाकर हँसने लगे– ''हा, हा, हो, हो।''

– वाराणसी (उ. प्र.)

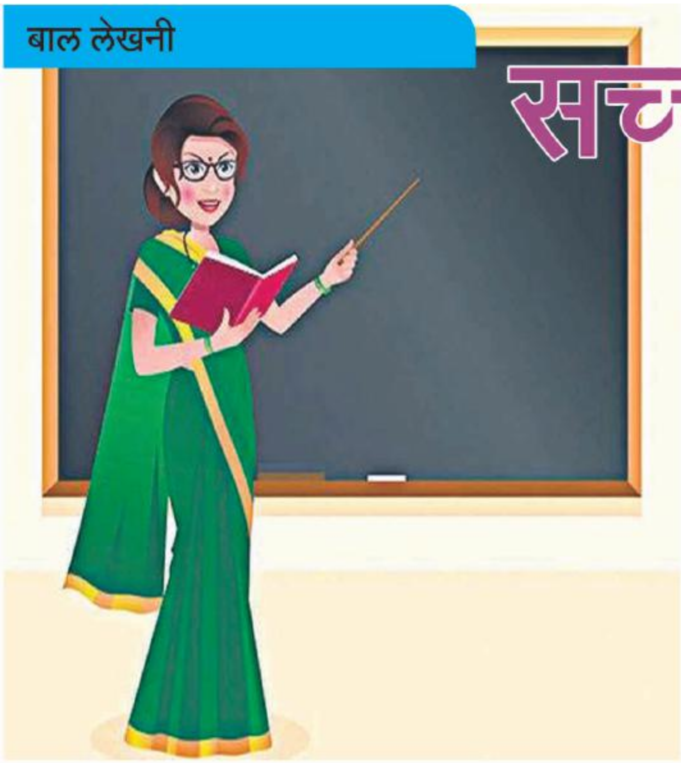

सच्चा मित्र

– माधव गुप्ता

राम अपने विद्यालय में कक्षा आठवीं का विद्यार्थी था। वह पढ़ाई में बहुत अच्छा था। वह अपनी कक्षा में परीक्षा में सदा प्रथम आता था। उसने अपनी कक्षा के एक विद्यार्थी सोहन से मित्रता कर ली। एक दिन जब कक्षा में परीक्षा हुई तो सोहन के मुख पर हवाइयाँ उड़ने लगीं क्योंकि उसने इस टेस्ट की तैयारी नहीं की थी। जबकि राम ने परीक्षा की तैयारी पहले से ही की हुई थी।

सोहन ने राम से आग्रह किया कि वह उसे नकल कराए ताकि वह अच्छे अंक पा सके। परन्तु राम एक ईमानदार विद्यार्थी था। वह न तो किसी की उत्तर पुस्तिका में से नकल करता था और न ही किसी और को अपनी उत्तर पुस्तिका में से नकल करने देता था। वह यह भी जानता था कि यदि उसने इस टेस्ट में उसकी सहायता कर दी तो वह त्रैमासिक परीक्षा में भी नहीं पढ़ेगा और केवल उसी के भरोसे परीक्षा देने आएगा।

इसलिए राम ने सोहन को मना कर दिया। सोहन राम से बहुत नाराज हुआ और उसे एक धोखेबाज मित्र कहकर वह कक्षा में द्वितीय आने वाले विद्यार्थी आकाश से प्रार्थना करने लगा। आकाश ने उसे खूब नकल कराई जिसके फलस्वरूप आकाश और सोहन दोनों को टेस्ट में दस में से नौ अंक प्राप्त हुए जबकि राम दस में से दस अंक प्राप्त कर शिक्षक जी की प्रशंसा का पात्र बना। सबने उसके लिये तालियाँ बजाई सिवाय आकाश और सोहन के।

अब आकाश और सोहन में मित्रता हो गई थी। सोहन अब राम से बात तक नहीं करता था। जब भी टेस्ट होता आकाश सोहन को नकल कराता। इससे सोहन को पूर्ण विश्वास हो गया कि उसे पढ़ने की आवश्यकता नहीं है। इसलिए वह अब पहले से भी अधिक लापरवाह हो गया। वह अपना गृहकार्य भी पूर्ण नहीं करता। उसने कभी भी विषय का कार्य पूर्ण करना तो दूर, कॉपी भी नहीं बनाई।

फिर त्रैमासिक परीक्षाएँ पास आ गईं। सोहन त्रैमासिक परीक्षा में भी आकाश के भरोसे ही आया था। परन्तु उसने देखा कि आकाश का अनुक्रमांक उसके अनुक्रमांक से बहुत दूर होने के कारण वह किसी और कक्षा में बैठा था। अब सोहन मुसीबत में पड़ गया। उसे अपनी गलती पर पछतावा होने लगा।

''पर अब पछताए होत क्या, जब चिड़िया चुग गई खेत।'' उसने उस परीक्षा में कुछ भी नहीं लिखा। घर जाकर उसने सारा वृत्तांत अपनी दादी माँ को सुनाया और रोने लगा। दादी माँ ने उसे समझाते हुए कहा– ''बेटा! सच्चा मित्र वह नहीं होता जो अपने मित्र की गलत आदतों में उसका साथ दे। अपितु सच्चा मित्र व होता है जो अपने मित्र को गलत रास्ते पर जाने से बचाएँ। आकाश ने तेरी बुरी आदतों में तेरा साथ दिया, तुझे नकल कराई जिसके फलस्वरूप तुझे लगा कि अब तुझे पढ़ने की आवश्यकता ही नहीं। वह तेरा सच्चा मित्र नहीं है। तेरा सच्चा मित्र तो राम है। उसने जब तुझे गलत मार्ग पर जाते देखा तो तुझे नकल कराने से मना कर दिया ताकि तू अगली बार से स्वयं पढ़कर आए और अच्छे अंक प्राप्त करे।''

सोहन बोला– ''दादी! मैं आपकी बात अच्छी तरह समझ गया। राम ही मेरा सच्चा मित्र है। परन्तु अब मैं क्या करूँ? मैंने तो किसी भी विषय की कॉपी तक नहीं बनाई?''

दादी– ''तुझे राम का घर पता है ना?''

सोहन– ''हाँ! दादी माँ!''

दादी माँ– ''बस, तू राम के घर जा और उसके साथ बैठकर पढ़ाई कर। मुझे पूर्ण विश्वास है वह तुझे पढ़ने में अवश्य सहायता करेगा और तुम दोनों फिर से मित्र बन जाओगे।''

सोहन राम के घर गया। सोहन ने राम को सारा वृत्तांत सुना दिया और राम से उसके दुर्व्यवहार के लिए क्षमा माँगी। राम ने सोहन को गले से लगा लिया। फिर राम ने सोहन की पढ़ने में सहायता की। अगले दिन परीक्षा में सोहन को सब कुछ आता था। ऐसे ही एक–एक करके सभी परीक्षाएँ समाप्त हो गईं।

अब परिणाम घोषित करने का दिन आया। सोहन और राम अपने माता–पिता के साथ परिणाम देखने विद्यालय आए। आकाश वहाँ पर पहले से अपने माता–पिता के साथ आया हुआ था। अध्यापिका ने उसे बताया कि उसने परीक्षा में द्वितीय स्थान प्राप्त किया है और प्रथम राम आया है। आकाश प्रसन्न था परन्तु खिन्न भी था क्योंकि वह राम से अधिक अंक प्राप्त न कर सका।

फिर राम और सोहन आए। अध्यापिका ने राम को बधाई देते हुए बताया कि वह कक्षा में प्रथम आया है और सोहन तृतीय स्थान पाकर उत्तीर्ण हुआ है। अध्यापिका ने सोहन की प्रशंसा की और कहा– ''उसने अपने आप में बहुत सुधार किया है।'' तब सोहन ने बताया कि– ''यह सब राम के कारण संभव हो पाया है। उसी ने पढ़ने में उसकी सहायता की।''

आज सोहन बहुत प्रसन्न था क्योंकि उसे अपना सच्चा मित्र जो मिल गया था।

– करनाल (हरियाणा)

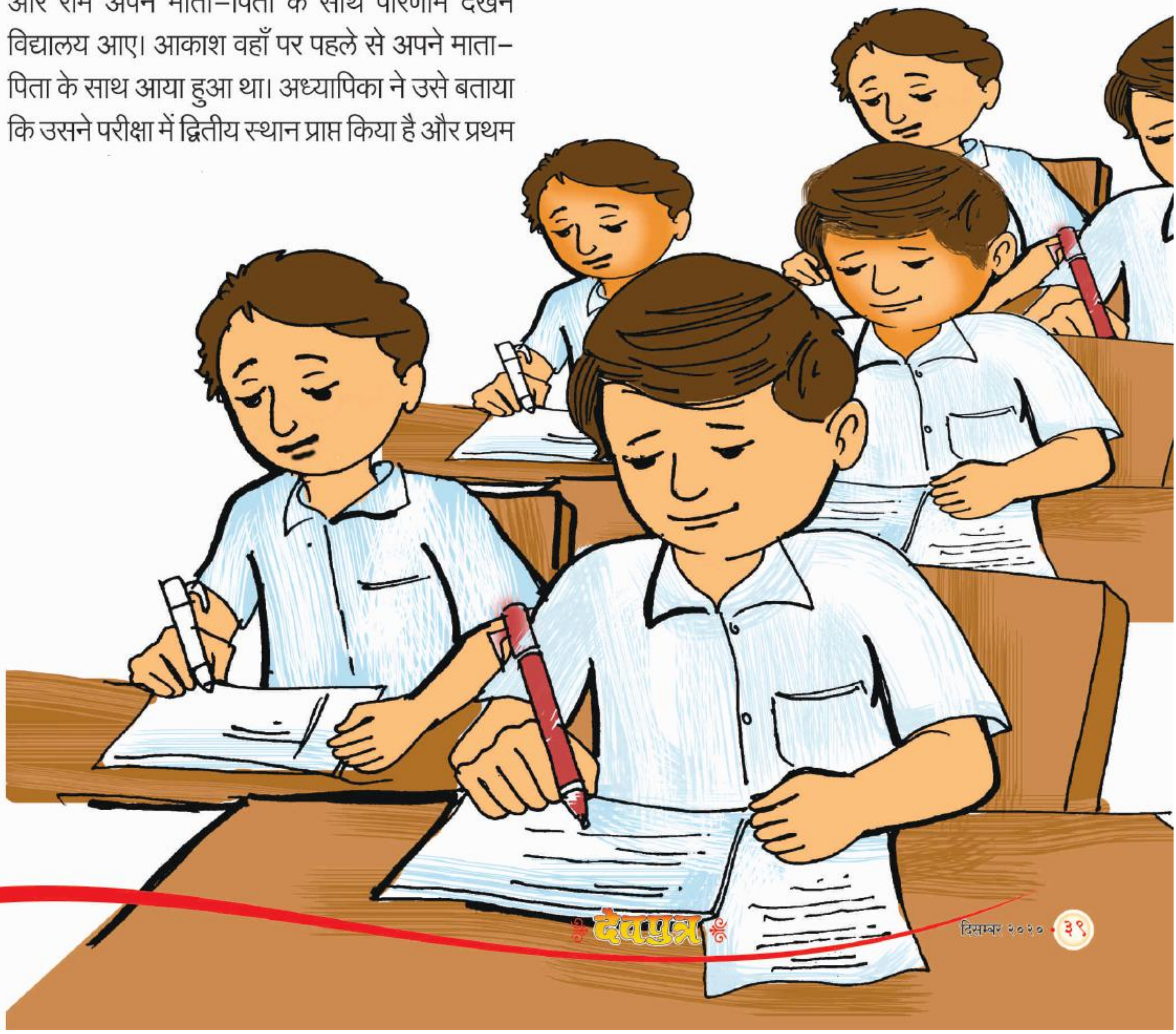

कागज पर सर्कस

– मूल:डॉ. राजीव ताम्बे
– अनुवाद:सुरेश कुलकर्णी

बाल मित्रो! आपने सर्कस कहाँ देखी है? बड़े मैदान पर, जहाँ अक्सर मेले लगते होंगे और उसमें अनेक जानवर देखे हैं, उनके करतब भी देखे होंगे। चलो आज हम आपको नई सर्कस बताते हैं वह है कागज पर सर्कस। चलो इस सर्कस के लिए आपको निम्नलिखित साहित्य/चीजों/वस्तुओं की आवश्यकता पड़ेगी।

एक ड्राईंग शीट अथवा समाचार पत्र का कागज। एक चौकोनी रंगीन कपड़ा अथवा एक टॉवेल। एक सेप्टी पिन और एक आलपिन। चुम्बक।

इतने सामान से हम अपनी सर्कस शुरू करते हैं, चलो हो जाइए तैयार। दो बच्चे कागज को अथवा टॉवेल को पकड़कर खड़े सीधे रहेंगे। एक बच्चा हाथ में चुम्बक लिये, कागज या टॉवेल के पीछे खड़ा रहेगा और अपने पास जो मेग्नेट है, उसको कागज या टॉवेल के पीछे चिपकाकर रखेगा। इसी समय एक बालक जिस जगह पर चुम्बक चिपकाकर रखा है, उस पर सेप्टी पिन या आलपिन रखेगा जो अपने आप चुम्बक पर चिपक जाएगी। अब जिसके हाथ में चुम्बक है वह चुम्बक के सहारे उस सेप्टीपिन या आलपिन को आगे खिसकाकर ले जायेगा और पीछे भी ले आयेगा, ऊपर नीचे ले जायेगा, चूँकि उसके हाथ में चुम्बक है इसलिए सेप्टीपिन या आलपिन गिरेगी नहीं बल्कि सीधे, आगे, पीछे, ऊपर, नीचे जैसे चलाओगे वह चलती रहेगी, तेजी से चलाया तो फटाफट दौड़ेगी। ऐसी सर्कस देखने को सबको मजा आएगा।

आप भी देखो करके। ऐसा क्यों होता है? चलो इसका भी समाधान कर देते हैं। चुम्बक, लोहा, कोबाल्ट और निकल इन तीन धातुओं को या इनसे बने चीजों को आकर्षित करता है। एक नई जानकारी।

चुम्बक पर एक के नीचे एक ऐसी आलपिन को चिपकाओ और धीरे से उठाना इस रेलगाड़ी को, अब यह देखे कि कितनी आलपिन चिपक गई।

इसी तरह सेप्टीपिन की रेलगाड़ी बनाओ और देखो किसकी रेलगाड़ी सबसे बड़ी बनती है। यह अपना प्रयोग अपने अन्य मित्रों के साथ करके उन्हें भी अपने सर्कस ग्रुप में सम्मिलित करें। चलो फिर मिलते हैं अगले प्रयोग के साथ।

– इन्दौर (म. प्र.)

कविता

पढ़ना बहुत जरूरी

– डॉ. अश्वघोष

काम करो सब, ध्यान रहे पर
पढ़ना बहुत जरूरी,
इससे मिट जाती हैं सारी
जीवन की मजबूरी।

सारे सपने पूरे होते
पूरी सब इच्छाएँ,
ठाठबाट का जीवन बीते
दूर रहें विपदाएँ।

मन चाहा सब मिल जाएगा
थोड़ा समय निकालो,
पढ़ने–लिखने का व्रत लेकर
कॉपी–कलम सँभालो।

– देहरादून (उ. प्र.)

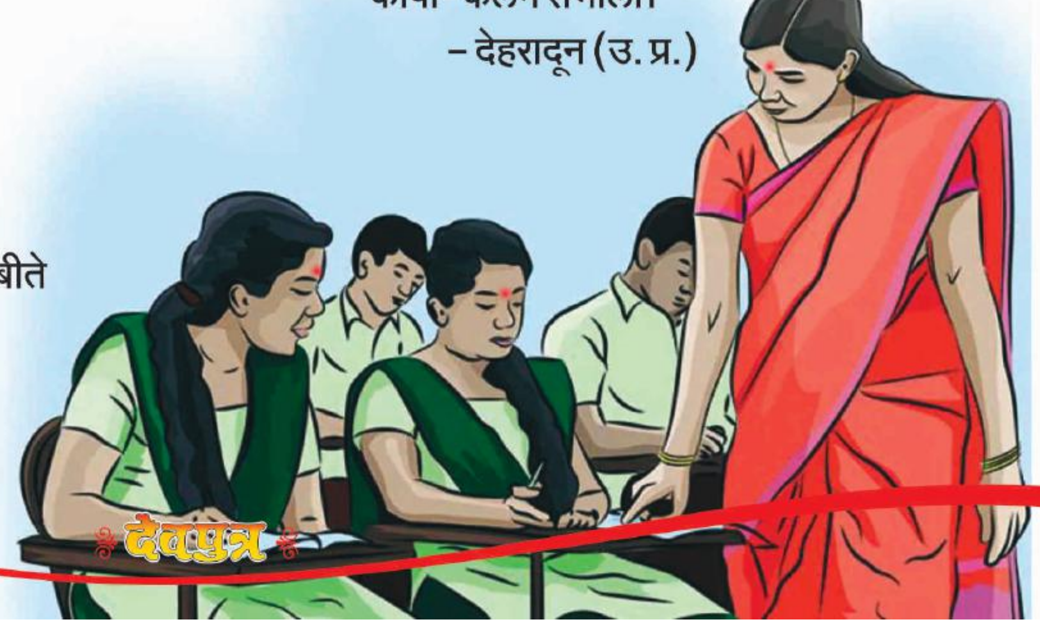

पहेलियाँ

– प्रवीन कुमार

- हाथी घोड़े ऊँट
  राजा–रानी, प्यादे
  कौन सा वो खेल
  जिसमें ये सब आते
- काली हूँ पर बड़े काम की मीठा दूध पिलाऊँ
  पानी में जो अंदर जाऊँ बाहर ना जल्दी आऊँ
- चार पैर लकड़ी की छाती
  पढ़ो–लिखो या खाना खाओ
  काम बड़ी है आती
  बोलो क्या कहलाती?
- जो मुझे काटे उसे मैं रुलाऊँ
  खाने में मैं गजब स्वाद लाऊँ
- जलती जाए रोती जाए
  दुनिया को रोशन करती जाए
- रात होते ही आए
  दिन में छुप जाए
  दीवार पर है चलती
  कीट–पतंगे खाए
- दिन इसके लिये रात रात इसके लिये है दिन
  एक हिन्दू देवी का यह है वाहन

– कान्हौरा (हरियाणा)

उत्तर – मोमबत्ती, छिपकली, उल्लू, शतरंज, भैंस, मेज, प्याज।

बड़े लोगों के हास्य प्रसंग

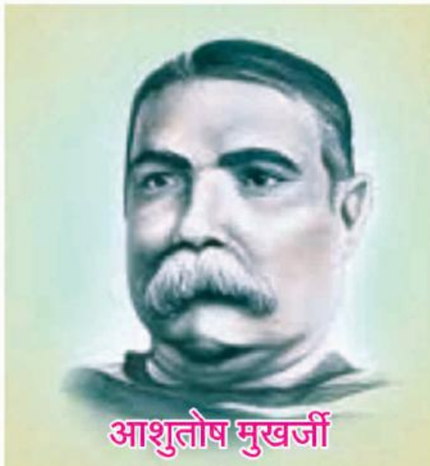
आशुतोष मुखर्जी

श्री आशुतोष मुखर्जी एक बार बहुत सारी पुस्तकें लेकर न्यायालय पहुँचे। न्यायाधीश ने जब उन्हें इतनी सारी पुस्तकें लाते हुए देखा तो कहा– ''पढ़ने के लिये आप अपना पुस्तकालय यहाँ भी ले आए?'' श्री मुखर्जी मुस्कुराते हुए बोले– ''श्रीमान् पढ़ने के लिए नहीं पढ़ाने के लिये।''

● ● ● ● ● ● ● ● ● ●

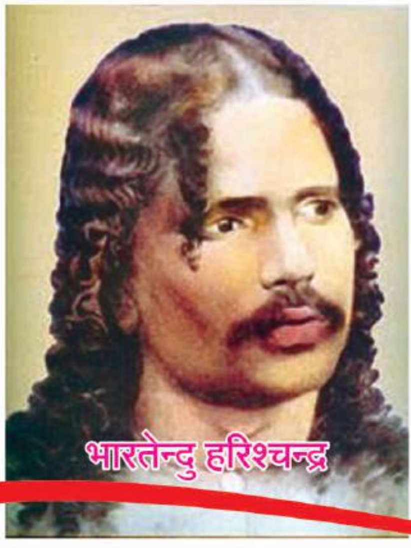
भारतेन्दु हरिश्चन्द्र

भारतेन्दु हरिश्चन्द्र इतने उदार और खुले हाथों लोगों की सहायता करने वाले व्यक्ति थे कि वे न केवल अपनी सारी सम्पत्ति लुटा चुके थे बल्कि उन पर ऋण भी चढ़ गया। एक बार बनारस महाराज ने उनसे बड़े स्नेह से कहा– ''बबुआ! तुमने अपनी सारी सम्पत्ति खा डाली।'' प्रत्युत्पन्नमति भारतेन्दु जी ने हँसते हुए उत्तर दिया– ''महाराज! इस सम्पत्ति ने मेरे दादाजी को खाया, मेरे पिताजी को खाया और मुझे भी खाने की सोच रही थी। मैंने सोचा इससे तो अच्छा है कि मैं ही इसे खा डालूँ। ●

शिष्टता

– घमंडीलाल अग्रवाल

सेठ धन्नामल अपने नाम के अनुरूप ही शहर के सबसे अधिक धनी व्यक्ति थे। गाड़ियाँ, नौकर–चाकर और अथाह धन सम्पदा। क्या कुछ नहीं था सेठ धन्नामल के पास। फिर भी सेठजी को मन की शांति प्राप्त नहीं थी। उनका असभ्य एवं क्रूर व्यवहार दर्शाता था कि वे किसी हीन मानसिकता के शिकार हैं। बात–बात में डाँट–फटकार एवं गाली–गलौच करना सेठजी की आदत में था। सेठानी जी जब–तब सेठजी को टोकती भी थीं कि वे सभी से अच्छा व्यवहार करें क्योंकि प्यार व सद्व्यवहार ही इंसान को दुनिया में सच्चा सम्मान दिलवाता है। धन–सम्पदा तो आनी–जानी है जो हमेशा किसी का साथ लंबे समय तक नहीं निभाती।

सेठजी तो ठहरे अड़ियल। कहाँ मानने वाले थे भला पत्नी की सलाह। उलटे उसे ही मार–पीटकर चुप कर देते थे। अहंकारी सेठ लोगों की आँख की किरकिरी बने हुए थे, विशेषकर हवेली में काम करने वाले दर्जन भर नौकर–नौकरानियों की। वे फूटी आँख भी नहीं भाते थे उन्हें। मरता क्या न करता। नौकरी तो करनी थी ही अत: प्रतिदिन ताने सुनने के साथ ही दिन की शुरुआत होती और डाँट–फटकार सुनने के साथ दिन का अंत। हवेली के नौकर–नौकरानियाँ बुरा–भला सुनने के अभ्यस्त जो हो चुके थे। किन्तु उनके मन में यह बात अक्सर आती रहती थी कि कोई उचित अवसर देखकर सेठजी को आगाह किया जाए कि वे अपना आचरण बदल लें और अच्छी राह पर चले।

दिन बीतते जा रहे थे। कोई युक्ति सूझ नहीं रही थी। आखिर एक अवसर हाथ आ ही गया नौकरों व नौकरानियों को। सभी ने योजना बनायी और उसे सफल बनाने की ओर अग्रसर हो चले। दरअसल, आज सेठ धन्नामल का जन्मदिन था। पूरी हवेली सजाई गयी। चारों ओर बिजली के छोटे–बड़े बल्ब, ट्यूबलाइटें व झालरें भी लटका दी गयीं। तरह–तरह के पकवान बन रहे थे सुबह से ही। हवेली के सारे दरवाजे खोल दिए गए थे। खुशियाँ ही खुशियाँ दस्तक दे रही थीं हवेली में। ऐसा लग रहा था कि दीवाली का ज्योतिर्मय त्योंहार आज धरती पर उतर आया है।

संध्या हुई। परिवार वालों के साथ सेठजी एक बड़े कक्ष में प्रविष्ट हुए। पाँच किलो का लड्डुओं का डिब्बा रखा हुआ था मेज पर। सेठजी ने उसे उठाया भगवान को भोग चढ़ाया और प्रसाद सबमें बांटने लगे। दीपक भी जलाए सेठजी ने अपने हाथों, से! तालियों की ध्वनि से वातावरण गूँज उठा। ''सुदिनं सुदिनं तव जन्मदिनम्'' का गीत बजने लगा जिसकी धुन पर सेठजी झूठ रहे थे। वाह, वाह, वाह! नौकर व नौकरानियाँ भी फीकी मुस्कान बिखेर रहे थे। दो घंटे तक जन्मदिन का उत्सव चलता रहा, किसी को भा रहा था तो किसी को खल रहा था।

रात्रि के नौ बज चुके थे। सेठजी अपनी गद्दी पर आकर बैठे। उन्होंने हवेली में काम करने वाले सारे नौकरों और नौकरानियों को अपने पास बुलाया। नौकर–नौकरानी हाथ जोड़कर डरे–डरे से सेठजी के पास आए और बोले– ''क्या कोई चूक हो गई है हमसें सेठजी?''

''नहीं, नहीं!'' सेठजी जोरदार ठहाका लगाते हुए ऊँचे स्वर में बोले।

''फिर?'' हैरानी भरे स्वर उभरे।

''अरे, आज का दिन तो बड़ा शुभ और पावन दिन है। आज मेरा जन्मदिन है और जन्मदिन के इस अवसर पर मैं तुम सबको एक उपहार देना चाहता हूँ।''

''उपहार! कैसा उपहार?'' एक नौकर बोला।

''बताता हूँ भाई, बताता हूँ।'' सेठजी का उत्तर था। सारे नौकर भयभीय थे। सेठजी न जाने कौन–सा उपहार देंगे उन्हें? कानाफूसी का दौर चल रहा था।

तभी सेठजी ने सेठानी को आवाज दी और बोले– ''तिजोरी खोलकर रखे हुए लिफाफे तो लाना?''

''जी, अभी लाई।'' सेठानी का उत्तर था।

कुछ ही मिनटों में सेठजी ने हर नौकर को एक–एक लिफाफा पकड़ाया और बोले– ''हर लिफाफे में एक–एक हजार रुपये हैं। आज से तुम सबका वेतन एक–एक हजार रुपये बढ़ाया जाता है।''

नौकरों के चेहरे अब भी मुरझाए हुए थे। कोई प्रसन्नता नहीं थी मुखड़ों पर। सेठजी ने देखा तो हैरान–परेशान। पूछ बैठे–

''क्यों प्रसन्नता नहीं हुई तुम सबको?''

''वो, वो....!'' एक नौकरानी कहते–कहते रुक गयी।

''हाँ, हाँ खुलकर बोलो कि क्या बात है?'' सेठजी ने जानना चाहा।

एक अन्य नौकर ने हिम्मत जुटायी और हाथ जोड़कर सेठजी से बोला– ''सेठजी, क्षमा करें! भले ही आप हमारा वेतन न बढ़ाएँ, किन्तु हमारे साथ शिष्टता से ही व्यवहार करें। हम भी आपकी तरह ही इंसान हैं, जानवर नहीं! अत्याचार सहने की हद होती है। आप चाहें तो हम सब नौकरी छोड़ सकते हैं। अब हम और अधिक अपमान नहीं सह सकते हैं। धन कमाएँगे तो सम्मान के साथ, हाँ।''

सुनकर सेठजी के पांवों तले की जमीन खिसक गयी। वह सब घटित हुआ जिसकी किसी को आशा नहीं थी। सेठजी ने स्वयं को संभाला। सुबह हुई। आज का सूरज संतोष एवं प्रसन्नता का उजाला बांट रहा था जिसकी रोशनी में पूरी हवेली जगमगा उठी थी। चारों ओर प्रसन्नता की लहर व्याप्त थी।

– गुरुग्राम (हरियाणा)

अम्मा मुझे बना दो तोता

– डॉ. विजयानन्द

अम्मा! मुझे बना दो तोता,
न जाने क्यों? मैं हूँ सोता।
क ख ग घ रट डालूँगा,
जो पाऊंगा सब खा लूँगा।।

नहीं करूँगा नहीं करूँगा,
तब मैं झगड़े नहीं करूँगा।
सुबह–शाम टीवी देखूँगा,
मौका पा गुल्ली खेलूँगा।।

चुप हो जाएगा यह तोता,
खाएगा रह रह कर गोता।
चुप हो जाएँगी तब नानी,
नहीं करूँगा मैं मनमानी।।

मन होगा गाऊँगा गाना,
सुन करके हँस देंगे नाना।
बापू भी खाएँगे गोता,
नहीं कहेंगे मैं हूँ सोता।।

अम्मा! मुझे बना दो तोता,
ना जाने क्यों? मैं हूँ सोता।।

– प्रयागराज (उ. प्र.)

नन्हीं के सवाल

– डॉ. अलका अग्रवाल

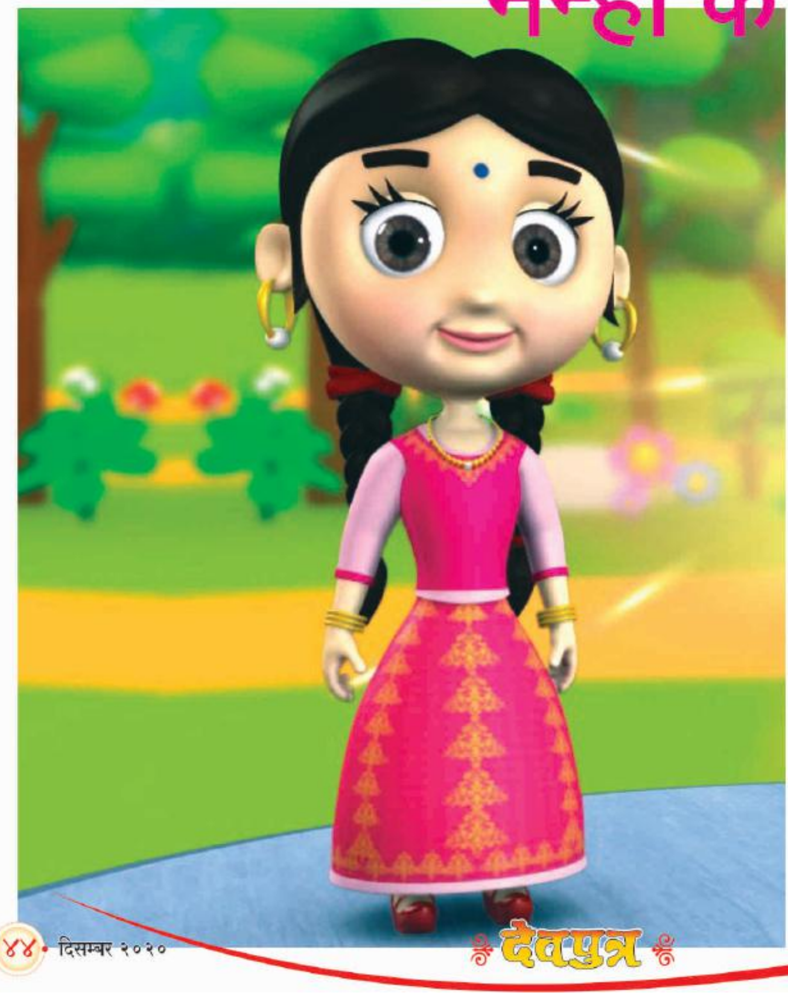

नन्हीं बिटिया करे सवाल,
प्रश्न करे या करे कमाल।

माँ बादल जल बरसाते,
क्यों वह स्वयं, भीग ना जाते?

अगर है चंदा मेरा मामा,
साथ नहीं क्यों, खेले ड्रामा।

सूरज कैसे बना बताएँ?
गुस्से में क्यों, हमें जलाए?

शेर की मौसी क्यों है बिल्ली?
उल्लू की क्यों उड़ती खिल्ली?

ऐसी बातें पूछा करती,
मुझको सदा निरुत्तर करती।

– जयपुर (राज.)

सामर्थ्य

चित्रकथा-

अपने सेवक की किसी बात पर राजा बहुत खुश हुआ -
आज जो चाहो मांग लो.
महाराज, एक लाख स्वर्णमुद्राएं दिलवा दें..
..लेकिन यह तो बहुत ज्यादा है.
..तो फिर एक स्वर्ण मुद्रा ही दिलवा दें.
कमाल है, कहां तो एक लाख स्वर्णमुद्राएं मांग रहे थे और अब एक ही स्वर्णमुद्रा मांग रहे हो?
महाराज, मैंने पहले आपकी सामर्थ्य के अनुसार मांगा जब आपने कम करने को कहा तो अपनी सामर्थ्य के अनुसार मांग लिया..
राजा ने सेवक को एक लाख स्वर्णमुद्राएं दिलवा दीं.

टिमटिम तारे

– किशनलाल गायरी महाराज

टिम–टिम, टिम–टिम करते तारे।
हमको लगते प्यारे तारे।।
काली–काली राज अँधेरी,
इसको खूब सजाते तारे।
कोई छोटे कोई बड़े ये,
फिर भी मन को भाते तारे।।
लगातार ये चमका करते,
कभी न बुझते प्यारे तारे।
टूटकर खुद करे उजाला,
धरती को चमकाते तारे।।
साँझ पड़े ये जल्दी आते,
रोज सुबह छिप जाते तारे।।

– बामनियां खुर्द (राज.)

प्यारे तारे

– डॉ. भैरूलाल गर्ग

नीले नभ में प्यारे–प्यारे
रोज रात को आते तारे।
चमक–दमक हीरे–मोती सी
ये नन्हें दीपक उजियारे।
कई गुना ये बड़े चाँद से
सूरज से भी बड़े सितारे।
लेकिन बहुत दूर धरती से,
लगें इसी से छोटे तारे।

– भीलवाड़ा (राज.)

दौड़ लगाते तारे

– अशोक जैन

आसमान के, दीपक प्यारे,
थिरके–नाचे, झिलमिल तारे।
भाँति–भाँति के, नभ पर सारे,
दौड़ लगाते, हिलमिल तारे।
हँसते रहते, बन उजियारे,
खेला करते, खिल–खिल तारे।
आते–जाते, सारे–सारे
नील गगन में, मिल–मिल जाते।
दिखते हैं सब, एक–से प्यारे,
चलते हैं सब, घुलमिल सारे।

– भवानी मंडी (राज.)

बच्चो! ऊपर के तीन श्रेष्ठ रचनाकारों की कविताएँ पढ़कर नीचे दिए खाली स्थान पर आपको 'तारे' विषय पर अपनी कल्पना को पंख लगाकर एक प्यारी सी कविता लिखना है।

आपकी कविता

पुस्तक परिचय

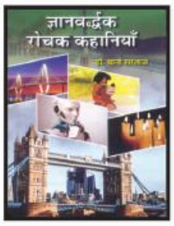

ज्ञानवर्द्धक रोचक कहानियाँ
मूल्य २००/-
प्रकाशक- साहित्यागार, धामाणी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर-३०२००३ (राज.)

डॉ. बानो सरताज बाल साहित्य जगत की जानी मानी रचनाकार हैं। नई सोच नए विचार एवं नई ताजगी से भरी पाँच रोचक बाल कहानियाँ इस पुस्तक में संकलित है।

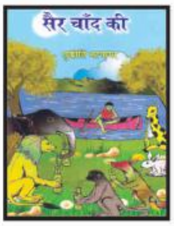

सैर चाँद की
मूल्य २००/-
प्रकाशक- साहित्यागार, धामाणी मार्केट की गली, चौड़ा रास्ता, जयपुर-३०२००३ (राज.)

सुकीर्ति भटनागर बालसाहित्य विश्व का एक सुपरिचित हस्ताक्षर हैं।

आपकी बारह मनोरंजन एवं बोध से परिपूर्ण रोचक कहानियाँ इस संकलन में हैं।

प्रख्यात बालसाहित्यकार डॉ. राकेश चक्र की तीन पुस्तकें

राकेशचक्र की मनोरंजक शिशु कविताएँ
मूल्य ३९५/-
प्रकाशक- पंकजसिंह सेहबरपुर, रतनपुरा जिला मऊ-०६ (उ. प्र.)

श्री विजय बागरी 'विजय' द्वारा संपादित एक सौ इकतीस शिशु कविताओं का बृहद् संकलन। नन्ही-नन्ही कविताएँ जो शिशुओं को मन भाए।

गाते अक्षर खुशियों के स्वर
मूल्य १००/-
प्रकाशक- ज्ञान गीता प्रकाशन एफ-७ गली नं.-१, पंचशील गार्डन एक्स. नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२

हिन्दी वर्णमाला के प्रत्येक स्वर और व्यंजन से आरंभ शिशुओं के लिए रोचक ढंग से वर्ण परिचय कराती कविताएँ।

चतुराई का पुरस्कार
मूल्य ३५/-
प्रकाशक- राष्ट्रीय पुस्तक न्यास, भारत, नेहरुभवन, ५, इंस्टीट्यूशनल एरिया, फेज-२, वसंतकुंज नईदिल्ली-७०

बुद्धिबल सबसे बड़ा बल है। चतुराई से हर कठिनाई का हल निकाला जा सकता है यही प्रेरणा देती बहुरंगी बालकथा।

छोटी कहानी

आशीर्वाद

– गोविन्द भारद्वाज

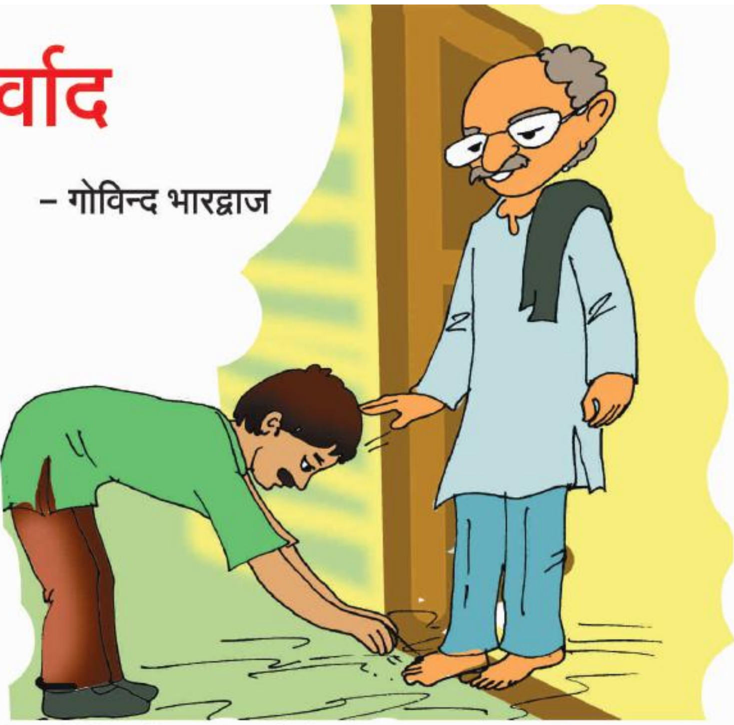

रोहित की प्रसन्नता का आज कोई ठिकाना नहीं था। आज उसका दसवीं का परिणाम जो आया था। अपने गुरुजी से मिलना व उनका आशीर्वाद लेना उसके लिए आज बहुत आवश्यक था। वह तो अपने गुरुजी को अच्छी तरह जानता भी था और पहचानता भी था। लेकिन गुरुजी के लिए वह अनजान था। इस एकतरफा जान–पहचान के बाद भी रोहित ने अपने गुरुजी का उपकार पाकर जिले में प्रावीण्य सूची में प्रथम स्थान प्राप्त किया था।

रोहित सुबह–सुबह ही अपने गुरु के घर पहुँचा। जैसे ही किवाड़ खटखटाया तो गुरुजी ने ही किवाड़ खोला। रोहित ने तुरंत उनके चरण स्पर्श किए। उन्होंने आशीर्वाद दिया। एक पल ठहर कर पूछा, ''बेटा! तुम कौन हो.. मैंने तुम्हें पहचाना नहीं।'' ''गुरुजी आप मुझे नहीं जानते किन्तु मैं आपको पिछले एक वर्ष से बहुत अच्छी तरह से जानता हूँ। आप मेरे गुरु नहीं भगवान हैं। आप न होते तो मैं आज दर–दर की ठोकरे खा रहा होता।'' रोहित ने नम आँखों से कहा। गुरुजी ने उसे घर के अंदर बैठाया। रोहित ने कहा– ''गुरुजी मैं बहुत गरीब घर का लड़का हूँ। पिछले वर्ष आपके विद्यालय से मैंने स्वाध्यायी विद्यार्थी यानि प्राईवेट बोर्ड का फॉर्म भरा था। जब मैं फॉर्म भरने आया था, तब मेरी जेब में मात्र सौ रुपए थे और बोर्ड का शुल्क साढ़े पाँच सौ रुपये था। अन्य सभी शिक्षकों ने मुझे फॉर्म भरने से मना कर दिया था। किन्तु आपने मेरी नौवीं कक्षा की अंकतालिका देखकर कहा था कि ये बच्चा बोर्ड परीक्षा में बैठने का वास्तविक पात्र है। आपने अनजान होते हुए भी मरा शुल्क अपनी जेब से भरा। इतना ही नहीं मेरे सौ रुपए लौटाते हुए कहा था कि इन रुपयों से कॉपी–किताब खरीद लेना। बस उसी दिन से आपको अपना हृदय से गुरु मान लिया था। इसलिए आपका आशीर्वाद लेने चला आया।''

रोहित ने मिठाई का डिब्बा व एक गुलाब का फूल देते हुए कहा। अनजान गुरुजी को वे सारी बातें याद आ गयी। उन्होंने उसे तुरन्त अपने गले से लगा लिया। रोहित को गुरुजी का आशीर्वाद मिल चुका था।

– पीलीखान (राजस्थान)

छः अंगुल मुस्कान

• एक कंजूस (अपने नौकर से)– अरे छोटू! तू मुझे बर्बाद करायेगा।

छोटू– क्यों क्या हुआ मालिक?

मालिक– दो ब्रेड के बीच इतना सारा मक्खन?

छोटू– मालिक गलती से मेरी थाली आपके पास चली गई है।

• रमेश–सुरेश, तुम कार रेस वाले दिन के बाद आज मिले हो। क्या कार रेस करते हुए दूर निकल गये थे?

सुरेश–नहीं भाई! इसी शहर के अस्पताल में पड़ा था।

• शिक्षक– बताओ सूर्य और चन्द्रमा में से कौन सा अधिक दूर है?

गोलू–जी, दोनों बराबर दूरी पर है परन्तु एक अंतर है।

शिक्षक–क्या?

गोलू–सूर्य दिन में दिखता है और चन्द्रमा रात में।

वे प्यारे फूल

– पूनम पाण्डे

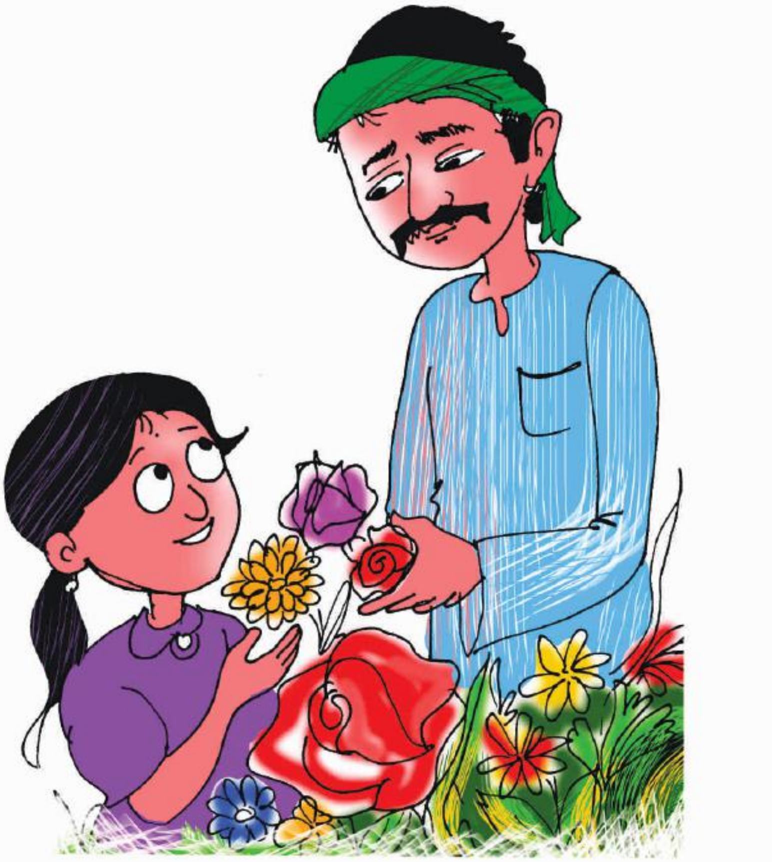

एक बहुत ही सुंदर कॉलोनी थी। उस कॉलोनी के बीच एक बगीचा बना हुआ था। उस उद्यान की देखभाल करने वाले माली काका ने उद्यान की क्यारियों को फूलों से सजा कर रखा था।

इतने सुन्दर–सुन्दर गुलाब, चमेली, गेंदा, गुलदाउदी, लिली आदि की खूबसूरती वहाँ देखते ही बनती थी। बच्चे कभी फूल तोड़ने के लिए बढ़ते भी थे तो माली काका सख्ती से मना कर दिया करते थे। यों उनका स्वभाव बहुत ही नरम था किन्तु फूलों को थोड़ी सी मस्ती के लिए डाली से अलग करना माली काका को कभी भी पसंद नहीं था।

एक शाम उद्यान में बच्चे खेल रहे थे और माली काका पौधों की देखभाल में मगन थे। उसी समय तोते उड़ते हुए आये और पौधों पर मंडराने लगे। तोतों की कुछ मौजमस्ती के कारण दो–तीन गुलाब टूटकर गिर पड़े। कुछ पूरे खिले हुए थे और कुछ अधखिले ही थे। तोते उड़कर दूर अम्बर में चले गये लेकिन कुछ बच्चे माली काका के पास आकर उनसे प्रश्न करने लगे।

वे जानना चाहते थे कि तोते तो अपनी मौज में फूल बिखेर गये तो अब माली काका अपनी सख्ती भला दिखायेंगे तो किसको? अब तो यह फूल कचरे के पात्र में ही फेंक दिये जायेंगे। आदि आदि बच्चों के प्रश्न पर माली काका एकदम मौन रहे। उन्होंने फूलों को बटोरकर एक जगह रख दिया और उन पर पानी की बूँदें भी छिड़क दीं। इतनी देर में एक और अधखिला लाल गुलाब भी क्यारी में गिर पड़ा। माली काका ने उसे भी पानी की बूँदें छिड़ककर बाकी फूलों के साथ सहेजकर रख दिया।

कुछ क्षण बाद एक प्यारी सी बच्ची उद्यान में आयी और गुमसुम होकर बैठ गयी। पीछे–पीछे उसकी माँ भी आयी।

बच्ची आज विद्यालय में किसी प्रतियोगिता में पराजित हो गयी थी और बहुत उदास थी। उसकी माँ उसे बहलाने का प्रयत्न कर रही थी।

माली काका सब सुन रहे थे। उन्होंने बाकी बच्चों की सहायता से एक चुटकुला सुनाने का प्रस्ताव रखा। सभी तैयार हो गए।

किसी ने चूहे का चुटकुला सुनाया, किसी ने हाथी और चींटी का, किसी ने रोगी और चिकित्सक का। चुटकुले सुनकर गुमसुम बच्ची का हँसते–हँसते पेट दुखने लगा। उसकी उदासी दूर हो गयी।

माली काका ने सहेज कर रखे गुलाब उन सभी चुटकुले सुनाने वाले कलाकार बच्चों को उपहार में दे दिये। एक गुलाब और बच गया था।

माली काका ने उस नन्ही बिटिया को दे दिया। वातावरण में गुलाब की महक भर गयी।

– कोटड़ा (राजस्थान)

बचपन के खेल

– नवीन गौतम

आओ रामू आओ श्यामू, खेलें खेल।
आओ सीता आओ गीता, कर लें मेल।।
चुन्नू मुन्नू तुम भी आओ, बैठो पास।
खेल खेलने से होता है, देख विकास।।
तन मन स्वस्थ बना रहता है, सुन लो बात।
खेलो कूदो दौड़ो चाहे, दिन हो रात।।
खेल खेलने से लगती है, हमको भूख।
खेल बिना ये तन भी साथी, जाता सूख।।
मोबाइल के खेल करेंगे, आँख खराब।
कार्टून से नहीं बनोगे, आप नवाब।।
अक्कड़ बक्कड़, पोशम पा का, या फिर रेल।
छुपन छुपाई, चोर सिपाही, अच्छे खेल।।
लब्बो डँगरी, आँख मिचौली, लँगड़ी टाँग।
इन्हें खेल लगता, तन मन की पूरी माँग।।
गिल्ली–डंडा और कबड्डी, लगते खास।
चिड़िया उड़ में कभी फैल तो, होते पास।।
कंचे, गुट्टे, लूडो हो या, पिट्ठू फोड़।
इन खेलों का बोलो बच्चो, है क्या तोड़।।
रस्सी कूद में बहे पसीना, सुन लो आप।
कभी उतरता कभी चढ़ाता, सीढ़ी साँप।।
बच्चों को पकड़म पकड़ाई, आता रास।
ऐसे खेलों से होता है, बाल विकास।।
टीवी हो या मोबाइल हो, रहना दूर।
तन मन इनसे स्वस्थ न रहता, है भरपूर।।
क्या कम्प्यूटर की लत होती, बड़ी खराब।
मात पिता को देना होगा, सही जवाब।।
खेल वही खेलो जो देते, हैं आनंद।
मन के सारे राज खुलें अब, जो हैं बंद।।

– नयागाँव (राजस्थान)

डाक पंजीयन : एम.पी./आय.डी.सी./६२३/२०१८-२०२०
आर.एन.आय. पं. क्रं. ३८५७७/८५
प्रकाशन तिथि २०/११/२०२०
प्रेषण तिथि ३०/११/२०२०
प्रेषण स्थल- आर.एम.एस., इन्दौर

संस्कार संजोना अच्छी बात है संस्कार फैलाना और अच्छी बात।

वार्षिक शुल्क 180/-

आजीवन शुल्क 1400/-

बाल साहित्य और संस्कारों का अग्रदूत

सचित्र प्रेरक बाल मासिक
देवपुत्र सचित्र प्रेरक बहुरंगी बाल मासिक

स्वयं पढ़िए औरों को पढ़ाइये

अब और आकर्षक साज-सज्जा के साथ

अवश्य देखें- वेबसाईट : www.devputra.com

देवपुत्र अब Jio Net पर भी !

सरस्वती बाल कल्याण न्यास, इन्दौर के लिए मुद्रक एवं प्रकाशन कृष्णकुमार अष्ठाना द्वारा टी.एन. ट्रेडर्स, सांवेर रोड, इन्दौर से मुद्रित एवं ४०, संवाद नगर, इन्दौर से प्रकाशित

प्रधान सम्पादक - कृष्णकुमार अष्ठाना